नई शिक्षा-नीति - 2020

उच्च-शिक्षा विभाग, उत्तरप्रदेश शासन, लखनऊ

उत्तरप्रदेश के समस्त विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के लिए न्यूनतम एकीकृत-पाठ्यक्रम

विषय-संस्कृत

पाठ्यक्रम निर्माण के दिशा-निर्देशों के अनुरूप

(स्नातक के प्रथम तीन वर्षों के लिए)

प्रदेश-स्तरीय पाठ्यक्रम निर्माण समिति

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

पाठ्यक्रम समिति द्वारा संशोधित, परिवर्धित एवम् अनुमोदित पाठ्यक्रम

शैक्षणिक सत्र 2021-2022 एवं आगे के वर्षों के लिए

National Education Policy-2020

Common Minimum Syllabus for all U.P. State Universities/Colleges

SUBJECT : SANSKRIT

Steering Committee

Name	Designation	Affiliation
Mrs. Monika S. Garg, (I.A.S.), Chairperson Steering Committee	Additional Chief Secretary	Dept. of Higher Education U.P., Lucknow
Prof. Poonam Tandan	Professor, Dept. of Physics	Lucknow University, U.P.
Prof. Hare Krishna	Professor, Dept. of Statistics	CCS University Meerut, U.P.
Dr. Dinesh C. Sharma	Associate Professor, Dept. of Zoology	K.M. Govt. Girls P.G. College Badalpur, G.B. Nagar, U.P.

Supervisory Committee - Language Stream

Prof. Anita Rani Rathore	Principal	Govt. Degree College Gabhana, Aligarh, U.P.
Prof. Ramesh Prasad	Associate Professor & HoD Department of Pali	Sampoornanand Sanskrit University, Varanshi
Dr. Puneet Bisaria	Associate Professor, Department of Hindi	Bundelkhand University, Jhansi
Dr. Deepti Bajpai	Associate Professor, Department of Sanskrit	K.M. Govt. Girls P.G. College Badalpur, G.B. Nagar, U.P.

Syllabus Developed by:

S. N.	Name	Designation	Deptt.	College/University
1.	Dr. Deepti Bajpai	Member Faculty Supervisory Committee-Language &Associate Professor	Sanskrit	K.M. Govt Girls PG College, Badalpur, G.B. Nagar U.P.
2.	Dr. Shardindu Kumar Tripathi	Associate Professor	Sanskrit	Banaras Hindu Univ., Varanasi
3.	Dr. Prayag Narayan Mishra	Assistant Professor	Sanskrit	Lucknow University, Lucknow
4.	Dr. Neelam Sharma	Assistant Professor	Sanskrit	K.M. Govt Girls PG College, Badalpur, G.B. Nagar U.P.

नई शिक्षा-नीति 2020

उच्च-शिक्षा विभाग, उत्तरप्रदेश शासन, लखनऊ

उत्तरप्रदेश के समस्त विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के लिए न्यूनतम एकीकृत-पाठ्यक्रम

विषय-संस्कृत

पाठ्यक्रम निर्माण के दिशा-निर्देशों के अनुरूप

(स्नातक के प्रथम तीन वर्षों के लिए)

प्रदेश-स्तरीय पाठ्यक्रम निर्माण-समिति

डॉ दीप्ति वाजपेयी (पर्यवेक्षक) एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतम बुद्ध नगर	**डॉ. शरदिन्दु कुमार त्रिपाठी** (विषय विशेषज्ञ) एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी	**डॉ. प्रयाग नारायण मिश्र** (विषय विशेषज्ञ) असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ	**डॉ. नीलम शर्मा** (विषय विशेषज्ञ) असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतम बुद्ध नगर

नई शिक्षा-नीति - 2020

उत्तरप्रदेश के समस्त विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के लिए न्यूनतम एकीकृत-पाठ्यक्रम

विषय - संस्कृत (स्नातक-स्तर- मुख्य पाठ्यक्रम)

बी.ए. प्रथम-वर्ष -

प्रथम सेमेस्टर -	संस्कृत-पद्य साहित्य एवं व्याकरण	कोड- A020101T
द्वितीय सेमेस्टर -	संस्कृत-गद्य साहित्य, अनुवाद एवं संगणक अनुप्रयोग	कोड- A020201T

बी.ए. द्वितीय-वर्ष -

तृतीय सेमेस्टर -	संस्कृत-नाटक एवं व्याकरण	कोड- A020301T
चतुर्थ सेमेस्टर -	काव्यशास्त्र एवं संस्कृत लेखन-कौशल	कोड- A020401T

बी.ए. तृतीय-वर्ष -

पंचम सेमेस्टर -	प्रथम प्रश्नपत्र- वैदिक-वाङ्मय एवं भारतीय-दर्शन	कोड- A020501T
	द्वितीय प्रश्नपत्र - व्याकरण एवं भाषा-विज्ञान	कोड- A020502T
षष्ठ सेमेस्टर -	प्रथम प्रश्नपत्र - आधुनिक संस्कृत-साहित्य	कोड- A020601T

निम्नलिखित वैकल्पिक प्रश्नपत्रों में से कोई एक।

द्वितीय प्रश्नपत्र - क (वैकल्पिक) - **योग एवं प्राकृतिक-चिकित्सा** कोड- A020602T

अथवा

द्वितीय प्रश्नपत्र - ख (वैकल्पिक) - **आयुर्वेद एवं स्वास्थ्य-विज्ञान** कोड- A020603T

अथवा

द्वितीय प्रश्नपत्र - ग (वैकल्पिक) - **भारतीय वास्तुशास्त्र** कोड-A020604T

अथवा

द्वितीय प्रश्नपत्र - घ (वैकल्पिक) - **ज्योतिषशास्त्र के मूलभूत सिद्धान्त** कोड-A020605T

अथवा

द्वितीय प्रश्नपत्र - ङ (वैकल्पिक) - **नित्यनैमित्तिक अनुष्ठान** कोड- A020606T

विषय-संस्कृत (स्नातक-स्तर)

Programme Outcomes (POs)

- विद्यार्थियों को लेखन, वाचन एवं अध्ययन की दृष्टि से भाषागत दक्षता प्राप्त होगी।
- सहज एवं स्वाभाविक रूप से भाषागत पारंगता प्राप्त कर उनमें प्रभावशाली अभिव्यक्ति की क्षमता उत्पन्न होगी।
- आत्मविश्वास से युक्त एवं नेतृत्व क्षमता के धारक होंगे।
- नैतिक एवं चारित्रिक-दृष्टि से मूल्यवान व्यक्तित्वधारी होकर भारतीयता के बोध के साथ वैश्विक-नागरिक के रूप में भावी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होंगे।

Programme Specific Outcomes (PSOs)

- सर्वाधिक वैज्ञानिक-भाषा के रूप में संस्कृतभाषा के प्राचीन-महत्त्व एवं उसकी वर्तमान प्रासंगिकता को जानने-समझने योग्य होंगे।
- संस्कृत-साहित्य की विभिन्न विधाओं (गद्य, पद्य, नाटक, व्याकरण इत्यादि) से सुपरिचित होकर संस्कृत-मर्मज्ञ बन सकेंगे।
- संस्कृत-व्याकरण के विभिन्न अंगों के ज्ञान द्वारा भाषा के शुद्ध-अध्ययन, लेखन एवं उच्चारण-माध्यम से अभिव्यक्ति कौशल का विकास होगा।
- आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, ज्योतिष, नित्यनैमित्तिक कर्मकांड इत्यादि के माध्यम से जीविकोपार्जन के योग्य बनेंगे।
- वैदिक एवं लौकिक संस्कृत-साहित्य की समृद्धता एवं तन्निहित-नैतिकता व आध्यात्मिकता को अनुभूत कर भारतीय संस्कृति के महत्त्व को वैश्विकस्तर तक पहुंचाने में सक्षम होंगे।
- धर्म-दर्शन, आचार-व्यवहार, नीतिशास्त्र एवं भारतीयसंस्कृति के मूलतत्त्वों को जानकर उत्तम-चरित्रवान्-मानव एवं कुशल-नागरिक बनेंगे।
- समसामयिक-समस्याओं के समाधान के रूप में संस्कृत-साहित्य में निबद्ध सर्वांगीणता के प्रति शोधपरक-दृष्टि का विकास होगा।

Programme/Class: Certificate कार्यक्रम/वर्ग - सर्टिफिकेट	Year : First वर्ष - प्रथम	Semester : I सेमेस्टर - प्रथम
विषय - संस्कृत		
प्रश्नपत्र कोड-A020101T	प्रश्नपत्र शीर्षक - संस्कृत-पद्य साहित्य एवं व्याकरण	

Course outcomes : अधिगम उपलब्धियाँ -

- विद्यार्थी संस्कृत साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त कर काव्य के विभिन्न भेदों से परिचित हो सकेंगे।
- वह संस्कृत पद्य-साहित्य की सुगीतात्मकता का सौंदर्यबोध कर सकेंगे।
- उनमें काव्य में प्रयुक्त रस, छंद, अलङ्कारों को समझने की क्षमता विकसित होगी।
- पद्य में निहित सूक्तियों एवं सुभाषित वाक्यों के माध्यम से उनके नैतिक एवं चारित्रिक उन्नयन होगा।
- विद्यार्थियों के शब्दकोश में वृद्धि होने के साथ-साथ वह संस्कृत श्लोकों के शुद्ध और सस्वर-उच्चारण के कौशल में निपुण बनेंगे।
- संस्कृत-व्याकरण का सामान्य-ज्ञान प्राप्त कर उसकी वैज्ञानिकता से सुपरिचित हो सकेंगे।
- संस्कृत वर्णों के शुद्ध उच्चारण-कौशल का विकास होगा।
- स्वर एवं व्यंजन के मूल-भेद को समझ कर पृथक अर्थावगमन की क्षमता उत्पन्न होगी।
- स्वर, व्यंजन एवं विसर्ग संधि का विशिष्ट-ज्ञान एवं उनके अनुप्रयोग का कौशल विकसित होगा।

Credits : 6	Core Compulsory
Max. Marks : 25+75	Min. Passing Marks :

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week) : L-T-P: 6-0-0.

Unit इकाई	Topics पाठ्य-विषय	No. of Lectures व्याख्यान-संख्या
	प्रथम-भाग (PART-1)	
I	क - संस्कृत-वाङ्मय में पारंपरिक ज्ञान-विज्ञान एवं राष्ट्र गौरव - भारतीय-दर्शन, भूगोल एवं खगोल, गणित, ज्योतिष तथा वास्तु, योग, आयुर्वेद, अर्थशास्त्र, विज्ञान, संगीत इत्यादि का सामान्य परिचय ख - संस्कृत काव्य एवं व्याकरण का सामान्य परिचय प्रमुख कवि एवं वैयाकरण आचार्य - वाल्मीकि, वेदव्यास, कालिदास, भारवि, माघ, श्रीहर्ष, पाणिनि, कात्यायन, पतञ्जलि	4 8
II	रघुवंशम् - प्रथम: सर्ग (श्लोक संख्या 1 से 50) (व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न)	11
III	किरातार्जुनीयम् - प्रथम: सर्ग (व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न)	12
IV	नीतिशतकम् (श्लोक संख्या 1 से 25) (अर्थ एवं मूल्यपरक प्रश्न)	10

	द्वितीय भाग (PART-2)	
V	संज्ञा-प्रकरणम् (लघु-सिद्धांत-कौमुदी)	12
VI	अच्सन्धिः (सूत्र-व्याख्या एवं सूत्र निर्देश-पूर्वक सन्धि एवं सन्धि-विग्रह)	12
VII	हल्सन्धिः (सूत्र-व्याख्या एवं सूत्र निर्देश-पूर्वक सन्धि एवं सन्धि-विग्रह)	11
VIII	विसर्गसन्धिः (सूत्र-व्याख्या एवं सूत्र निर्देश-पूर्वक सन्धि एवं सन्धि-विग्रह)	10

This course can be opted as an elective by the students of following subjects :

सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)

संस्तुत ग्रन्थ -

- किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग), डॉ राजेंद्र मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद
- किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग), डॉ जनार्दन शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन, दिल्ली
- किरातार्जुनीयम् महाकाव्य, अनु. श्री राम प्रताप त्रिपाठी, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद
- रघुवंशम्, हिन्दी-संस्कृत टीका सहितम्, आचार्य शेषराज शर्मा 'रेग्मी', चौखंबा प्रकाशन, वाराणसी
- रघुवंशम् (प्रथम सर्ग), व्याख्याकार - महावीर शास्त्री, साहित्य भण्डार, मेरठ
- नीतिशतकम्, भर्तृहरि, (व्या०) सावित्री गुप्ता, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, 2008
- नीतिशतकम्, भर्तृहरि, (व्या०) राकेश शास्त्री, परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली, 2003
- नीतिशतकम्, समीर आचार्य, प्राच्य भारती प्रकाशन, गोरखपुर
- संस्कृत साहित्य का इतिहास, डॉ बलदेव उपाध्याय, चौखंबा प्रकाशन, वाराणसी
- संस्कृत साहित्य का इतिहास उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', चौखंबा भारती अकादमी, वाराणसी, पुनर्मुद्रित 2012
- संस्कृत साहित्य का इतिहास, वाचस्पति गैरोला, चौखंबा विद्याभवन वाराणसी, पंचम संस्करण, 1997
- लघु-सिद्धांत-कौमुदी, वरदराज, भैमी व्याख्या, भीमसेन शास्त्री (1-6 भाग), भैमी प्रकाशन, दिल्ली 1993
- लघु-सिद्धांत-कौमुदी, गोविंद प्रसाद शर्मा एवं आचार्य रघुनाथ शास्त्री,चौखंबा सुरभारती प्रकाशन
- लघु-सिद्धांत-कौमुदी, डॉ उमेश चंद्र पांडे, चौखंबा प्रकाशन
- लघु-सिद्धांत-कौमुदी (संज्ञा-सन्धि-प्रकरण), डॉ वेदपाल, साहित्य भंडार, मेरठ
- लघु-सिद्धांत-कौमुदी, डॉ रामकृष्ण आचार्य, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
- लघु-सिद्धांत-कौमुदी, डा. सत्यपाल सिंह, शिवालिक प्रकाशन, शक्तिनगर दिल्ली
- रचनानुवादकौमुदी, डा. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

प्रस्तावित सतत-मूल्यांकन-

(क) पाठ्यक्रम में निर्धारित ग्रंथों पर आधारित अधिन्यास (असाइनमेंट) 15 अंक

अथवा

संस्कृत श्लोकों के शुद्ध उच्चारण की प्रायोगिक/मौखिक परीक्षा

अथवा

माहेश्वर-सूत्र एवं प्रत्याहार-निर्माण एवं मौखिकी

(ख) लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ/लघु-उत्तरीय) 10 अंक

Course prerequisites: सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)
Suggested equivalent online courses: .....
Further Suggestions: .....

Programme/Class: Certificate कार्यक्रम /वर्ग- सर्टिफिकेट	Year : First वर्ष - प्रथम	Semester : II सेमेस्टर - द्वितीय
विषय-संस्कृत		
प्रश्नपत्रकोड- A020201T	प्रश्नपत्र शीर्षक - संस्कृत-गद्य साहित्य, अनुवाद एवं संगणक-अनुप्रयोग	

Course outcomes : अधिगम उपलब्धियाँ -

- विद्यार्थी संस्कृत-गद्य साहित्य का सामान्य-ज्ञान प्राप्त कर, गद्य-काव्य के भेदों सुपरिचित हो सकेंगे।
- संबंधित साहित्य के माध्यम से उनका नैतिक एवं चारित्रिक उत्कर्ष होगा।
- राष्ट्रभक्ति की भावना प्रबल होगी तथा उत्तम नागरिक बनेंगे।
- अनुवाद-कौशल में वृद्धि होगी।
- संस्कृत-गद्य के धाराप्रवाह एवं शुद्ध-वाचन का कौशल विकसित होगा।
- विद्यार्थी संगणक का सामान्य-ज्ञान प्राप्त कर, अधिगम-क्षमता में वृद्धि हेतु इसका उपयोग कर सकने में सक्षम होंगे।
- E-content एवं डिजिटल-लाइब्रेरी का उपभोग कर पाने में समर्थ होंगे।
- संस्कृतभाषा और साहित्य के नित-नूतन अन्वेषण को खोज पाने तथा उससे स्व-ज्ञानकोष में वृद्धि कर पाने योग्य होंगे।
- संगणक के प्रयोग के माध्यम से संस्कृत-ज्ञान के प्रचार-प्रसार एवं आदान-प्रदान करने में कुशल बनेंगे।
- पारंपरिक एवं वैश्विक-ज्ञान में सामंजस्य बनाकर ज्ञान की अभिवृद्धि करने एवं जीविकोपार्जन के नए मार्ग खोजने का कौशल विकसित होगा।

Credits : 6	Core Compulsory
Max. Marks : 25+75	Min. Passing Marks :
Total No. of Lectures -Tutorials-Practical (in hours per week): L-T-P: 6-0-0.	

Unit इकाई	Topics - पाठ्य-विषय	No. of Lectures व्याख्यान-संख्या

	प्रथम-भाग (PART-1)	
I	गद्य-साहित्य का उद्भव एवं विकास प्रमुख-साहित्यकार - बाणभट्ट, दण्डी, सुबन्धु, अम्बिकादत्त व्यास, पण्डिता क्षमाराव	11
II	शुकनासोपदेश: (व्याख्या)	12
III	शिवराजविजयम्-प्रथम निश्वास (व्याख्या)	12
IV	उपर्युक्त दोनों ग्रंथों से संबंधित समीक्षात्मक प्रश्न	10
	द्वितीय भाग (PART-2)	
V	अनुवाद- हिन्दी से संस्कृत में (नियम निर्देश-पूर्वक) (कारक एवं विभक्ति का ज्ञान अपेक्षित)	12
VI	अनुवाद- संस्कृत (अपठित) से हिन्दी अथवा अंग्रेजी में	11
VII	कंप्यूटर का सामान्य परिचय, संस्कृत की दृष्टि से कंप्यूटर की उपयोगिता, विभिन्न सॉफ्टवेयर कंप्यूटर में संस्कृत- हिन्दी-लेखन हेतु उपयोगी टूल्स - यूनिकोड, गूगल इनपुट टूल, गूगल असिस्टेंट एवं वॉइस-टाइपिंग आदि	12
VIII	इंटरनेट का प्रयोग एवं वेब-सर्च, ई-टेक्स्ट, ई-बुक्स, ई-रिसर्च जनरल, ई-मैग्जीन, डिजिटल-लाइब्रेरी ऑनलाइन टीचिंग लर्निंग प्लेटफॉर्म - जूम, टीम, मीट, वेब-एक्स ऑनलाइन लर्निंग एवं रिसर्च प्लेटफार्म - स्वयं, मूक, ई-पाठशाला, डेलनेट, इनफ्लाइब्रेट, शोधगंगा, गूगल स्कॉलर आदि	10

संस्तुत ग्रन्थ-

- शुकनासोपदेश:, बाणभट्ट, संपा. चंद्रशेखर द्विवेदी, महालक्ष्मीप्रकाशन, आगरा, प्रथम संस्करण 1986-87
- शुकनासोपदेश:, रामनाथ शर्मा 'सुमन', साहित्य भंडार, मेरठ
- शुकनासोपदेश:, डॉ महेश कुमार श्रीवास्तव, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
- शुकनासोपदेश: (कादम्बरी), डॉ उमेशचंद्र पांडे, प्राच्य भारतीय संस्थान, गोरखपुर
- शिवराजविजयम्, अंबिकादत्त व्यास, संपा. शिवकरण शास्त्री महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा
- शिवराजविजयम्, डॉ रमाशंकर मिश्र, चौखंबा प्रकाशन, वाराणसी
- शिवराजविजयम्, डॉ महेश कुमार श्रीवास्तव, विश्वविद्यालय प्रकाशन
- शिवराजविजयम्, डॉ देव नारायण मिश्र, साहित्य भण्डार, मेरठ
- संस्कृत-साहित्य का इतिहास, बलदेव उपाध्याय, चौखंबा प्रकाशन, वाराणसी
- साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, डॉ उमेश चंद्र पांडे, प्राच्य भारतीय संस्थान, गोरखपुर
- संस्कृत-साहित्य का इतिहास उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', चौखंबा भारती अकादमी, वाराणसी, पुनर्मुद्रित 2012
- संस्कृत-साहित्य का इतिहास, वाचस्पति गैरोला, चौखंबा विद्याभवन वाराणसी, पंचम संस्करण 1997
- संस्कृत-व्याकरण एवं अनुवाद कला, ललित कुमार मंडल, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली 2007

- अनुवाद-चंद्रिका, डॉ यदुनंदन मिश्र, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
- अनुवाद-चंद्रिका, ब्रह्मानंद त्रिपाठी, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
- अनुवाद-चंद्रिका, चक्रधर हंस नौटियाल, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1999
- संस्कृत-रचना, वी० एस० आप्टे, (अनु०) उमेशचंद्र पांडेय, चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी, 2008
- रचनानुवादकौमुदी, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2011
- कंप्यूटर का परिचय, गौरव अग्रवाल, शिवा प्रकाशन, इंदौर
- कंप्यूटर फंडामेंटल, पी.के सिन्हा, बी.पी.बी पब्लिकेशन, नई दिल्ली
- इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी, सुमिता अरोरा, धनपत राय पब्लिकेशन, नई दिल्ली

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)

.....

प्रस्तावित सतत-मूल्यांकन-

(क) पाठ्यक्रम में निर्धारित ग्रंथों पर आधारित अधिन्यास (असाइनमेंट) एवं मौखिकी 15 अंक

अथवा

लिखित-परीक्षा (वस्तुनिष्ठ लघु-उत्तरीय)

अथवा

संस्कृत-सम्भाषण

(ख) संगणक-प्रायोगिक-परीक्षा 10 अंक

Course prerequisites:

सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)

.....

Suggested equivalent online courses:

.....

Further Suggestions:

.....

Programme/Class: Diploma कार्यक्रम /वर्ग- डिप्लोमा	Year : Second वर्ष - द्वितीय	Semester : III सेमेस्टर - तृतीय
विषय - संस्कृत		
प्रश्नपत्र कोड-A020301T	प्रश्नपत्र शीर्षक- संस्कृत-नाटक एवं व्याकरण	

Course outcomes : अधिगम उपलब्धियाँ -

- संस्कृत-नाट्य-साहित्य को सामान्य रूप से समझ सकने में सक्षम होंगे।
- नाटक की पारिभाषिक-शब्दावली से सुपरिचित होंगे।
- नाटक में प्रयुक्त रस, छन्द एवं अलङ्कारों का सम्यक् बोध कर सकेंगे।
- संवाद एवं अभिनय कौशल में पारङ्गत होंगे।
- नवीन-पदों के ज्ञान द्वारा उनके शब्दकोश में वृद्धि होगी।
- भारतीय सांस्कृतिक-तत्त्वों एवं मूल्यों को आत्मसात् कर, भारतीयता के गर्वबोध से युक्त उत्तम नागरिक बनेंगे।
- व्याकरण-परक शब्दों की सिद्धि-प्रक्रिया से परिचित हो सकेंगे।
- व्याकरण-शास्त्र के ज्ञान के माध्यम से शुद्ध वाक्य-विन्यास कौशल का विकास हो सकेगा।

Credits : 6	Core Compulsory
Max. Marks : 25+75	Min. Passing Marks :

Total No. of Lectures-Tutorials - Practical (in hours per week) : L-T-P: 6-0-0

Unit इकाई	Topics पाठ्य-विषय	No. of Lectures व्याख्यान-संख्या
	प्रथम-भाग (PART-1)	
I	नाट्यसाहित्य-परम्परा तथा प्रमुख-नाटककार- भास, कालिदास, अश्वघोष, शूद्रक, हर्ष, भवभूति, विशाखदत्त, भट्टनारायण	12
II	स्वप्नवासवदत्तम् (प्रथम-अङ्क) व्याख्या एवम् समीक्षात्मक प्रश्न	11
III	अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1 से 2 अङ्क) व्याख्या एवम् समीक्षात्मक प्रश्न	11
IV	अभिज्ञानशाकुन्तलम् (3 से 4 अङ्क) व्याख्या एवम् समीक्षात्मक प्रश्न	11
	द्वितीय भाग (PART-2)	
V	कृदन्तप्रकरण (लघु-सिद्धान्त-कौमुदी) कृत्य- तव्यत्, अनीयर्, यत्, ण्यत् कृत्- तुमुन्, क्त्वा, ल्यप्, क्त, क्तवतु, शतृ, शानच्, ण्वुल, तृच्, णिनि	11
VI	तद्धितप्रकरण - अपत्यार्थ (लघु-सिद्धान्त-कौमुदी)	11

VII	विभक्त्यर्थप्रकरण (लघु-सिद्धान्त-कौमुदी) समासप्रकरण - केवलसमास पर्यन्त (लघु-सिद्धान्त-कौमुदी)	12
VIII	स्त्रीप्रत्यय (लघु-सिद्धान्त-कौमुदी)	11

संस्तुत ग्रन्थ-

- अभिज्ञानशाकुन्तलम्, डॉ कपिलदेव द्विवेदी, रामनारायण लाल विजय कुमार प्रकाशन, इलाहाबाद
- अभिज्ञानशाकुन्तलम्, डॉ उमेश चंद्र पांडे, प्राच्य भारतीय संस्थान गोरखपुर
- अभिज्ञानशाकुन्तलम्, डॉ रमाशंकर त्रिपाठी, विश्वविद्यालय प्रकाशन
- अभिज्ञानशाकुन्तलम्, डॉ निरूपण विद्यालङ्कार, साहित्य भंडार, मेरठ
- स्वप्नवासवदत्तम्, श्री तरणीश झा, रामनारायण लाल बेनीमाधव प्रकाशक, इलाहाबाद
- स्वप्नवासवदत्तम्, जयकृष्णदास हरिदास गुप्त, चौखंबा संस्कृत सीरीज, वाराणसी
- स्वप्नवासवदत्तम्, डॉ. संगीता अग्रवाल, ज्ञान प्रकाशन, मेरठ
- संस्कृत-नाटक-उद्भव और विकास, डॉ ए.वी. कीथ, अनुवादक उदयभानु सिंह
- नाट्य-साहित्य का इतिहास और नाट्य-सिद्धांत, जयकुमार जैन, साहित्य भंडार, मेरठ, 2012
- संस्कृत के प्रमुख नाटककार और उनकी कृतियां, डॉ गंगासागर राय
- संस्कृत-साहित्य का इतिहास, उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', चौखंबा भारती अकादमी, वाराणसी, पुनर्मुद्रित 2012
- संस्कृत-साहित्य का इतिहास, वाचस्पति गैरोला, चौखंबा विद्याभवन वाराणसी, पञ्चम् संस्करण 1997
- लघु-सिद्धान्त-कौमुदी, वरदराज, भैमीव्याख्या, भीमसेन शास्त्री (1-6 भाग), भैमी प्रकाशन, दिल्ली 1993
- लघु-सिद्धान्त-कौमुदी, गोविंद प्रसाद शर्मा एवं आचार्य रघुनाथ शास्त्री, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन
- लघु-सिद्धान्त-कौमुदी, डॉ उमेशचंद्र पांडे, चौखंबा प्रकाशन
- लघु-सिद्धान्त-कौमुदी, डॉ रामकृष्ण आचार्य, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)

.....

प्रस्तावित सतत-मूल्यांकन-

(क) पाठ्यक्रम में निर्धारित नाटकों पर आधारित संवाद एवं अभिनय-कौशल-परीक्षा 15 अंक

अथवा

पाठ्यक्रम में निर्धारित ग्रंथों पर आधारित अधिन्यास (असाइनमेंट) एवं मौखिकी

(ख) लिखितपरीक्षा (वस्तुनिष्ठ / लघु-उत्तरीय) 10 अंक

Course prerequisites:

सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)

.....

Suggested equivalent online courses:

.....

Further Suggestions:

.....

12

Programme/Class: Diploma कार्यक्रम /वर्ग- डिप्लोमा	Year: Second वर्ष - द्वितीय	Semester: IV सेमेस्टर - चतुर्थ
विषय - संस्कृत		
प्रश्न पत्र कोड-A020401T	प्रश्नपत्र-शीर्षक- काव्यशास्त्र एवं संस्कृत लेखन-कौशल	

Course outcomes: अधिगम उपलब्धियाँ-

- विद्यार्थी काव्यशास्त्र के उद्भव और विकास से सुपरिचित होकर काव्यशास्त्रीय तत्त्वों को समझने में सक्षम होंगे।
- छन्द-भेद एवं उनके नियमों को समझने में समर्थ होंगे।
- संस्कृत-अलङ्कारों के ज्ञान के माध्यम से काव्य के सौंदर्य का बोध कर सकेंगे।
- कल्पनाशीलता एवं रचनात्मक क्षमता का विकास होगा।
- शब्द-ज्ञानकोष में वृद्धि होगी।
- व्याकरण-शास्त्र के ज्ञान के माध्यम से शुद्ध वाक्य-विन्यास-कौशल का विकास हो सकेगा।
- विद्यार्थियों में निबंध एवं अनुच्छेद लेखन-क्षमता का विकास होगा।
- संस्कृत पत्र-लेखन-कौशल में वृद्धि होगी।
- अपठित अंश के माध्यम से विषयवस्तु अवबोध एवं अभिव्यक्ति का कौशल विकसित होगा।

Credits: 6	Core Compulsory
Max. Marks: 25+75	Min. Passing Marks:
Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): L-T-P: 6-0-0.	

Unit इकाई	Topics पाठ्यविषय	No. of Lectures व्याख्यान-संख्या
	प्रथम-भाग (PART-1)	
I	**संस्कृत-काव्यशास्त्र-परम्परा : प्रमुख आचार्य व उनके ग्रन्थ** **भरत, भामह, दण्डी, वामन, आनन्दवर्धन, अभिनव गुप्त, कुन्तक, क्षेमेंद्र, मम्मट, विश्वनाथ, जगन्नाथ**	12
II	**साहित्यदर्पण (प्रथम-परिच्छेद) कारिकाओं की व्याख्या मात्र**	11
III	**छन्द (काव्यदीपिका से अधोलिखित छन्द)** **अनुष्टुप, आर्या, वंशस्थ, द्रुतविलंबित, भुजङ्गप्रयात, बसन्ततिलका, इन्द्रवज्रा, उपेंद्रवज्रा, उपजाति, मालिनी, मन्दाक्रांता, शिखरिणी, शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा**	11

IV	अलङ्कार (साहित्यदर्पण से अधोलिखित अलङ्कार) अनुप्रास, यमक, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, संदेह, भ्रान्तिमान, दृष्टांत, निदर्शना, विभावना, विशेषोक्ति, अर्थान्तरन्यास, समासोक्ति	11
	द्वितीय-भाग (PART-2)	
V	निबन्धाः - वेदाः, प्रिय कविः, संस्कृतभाषा, योगस्य-उपादेयता, नैतिक-मूल्यानि।	12
VI	पत्र-व्यवहारः (रचनानुवादकौमुदी)	11
VII	सम-सामयिक विषयों पर अनुच्छेद-लेखन अथवा विज्ञापन अथवा समाचार-लेखन	11
VIII	अपठित गद्यांश अथवा पद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर	11

संस्तुत ग्रन्थ-

- साहित्य-दर्पण (विश्वनाथ कविराज), सत्यव्रत सिंह, चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी
- साहित्य-दर्पण, शालिग्राम शास्त्री मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, वाराणसी
- साहित्य-दर्पण, राज किशोर सिंह प्रकाशक केंद्र, लखनऊ
- वृत्तरत्नाकरः श्री केदारभट्ट, (व्या.) बलदेव उपाध्याय, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2011
- छन्दोऽलंकारसौरभम्, डॉ. सावित्री गुप्ता, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, 2009
- छन्दोऽलंकारसौरभम्, प्रो. राजेंद्र मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद
- छन्दमञ्जरी-विकास, हरिदत्त उपाध्याय
- काव्यदीपिका, कांतिचंद्र भट्टाचार्य, साहित्य भंडार, मेरठ
- काव्यदीपिका, डॉ बाबूराम त्रिपाठी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
- साहित्यामृतम् - वागीश शर्मा दिनकर, शारदा संस्कृत संस्थान, वाराणसी
- संस्कृत-साहित्य का इतिहास, उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', चौखंबा भारती अकादमी, वाराणसी, पुनर्मुद्रित 2012
- संस्कृत-साहित्य का इतिहास, वाचस्पति गैरोला, चौखंबा विद्याभवन वाराणसी, पंचम संस्करण 1997
- हायर-संस्कृत-ग्रामर, मोरेश्वर रामचंद्र काले, (हिंदी-अनुवादक) डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, श्री रामनारायणलाल बेनीप्रसाद, इलाहाबाद 2001
- संस्कृत-व्याकरण एवं अनुवाद-कला, ललित कुमार मंडल, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली 2007
- अनुवाद-चंद्रिका, डॉ. यदुनंदन मिश्र, अनुवाद-चंद्रिका, ब्रह्मानंद त्रिपाठी, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
- अनुवाद-चंद्रिका, चंद्रधर हंस नौटियाल, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1999
- संस्कृत-रचना, वी० एस० आप्टे, (अनु०) उमेशचंद्र पांडेय, चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी, 2008
- रचनानुवादकौमुदी, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2011

- संस्कृतनिबन्धशतकम्, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, 2010
- संस्कृतनिबन्धावली, रामजी उपाध्याय, चौखंबा प्रकाशन
- संस्कृत निबन्ध-सुधा, राधेश्याम गंगवार, नागराज प्रकाशन, पिथौरागढ़, 2005
- संभाषणसन्देश: - 'अक्षरम्', गिरिनगरम्, बैंगलुरु

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)

.....

प्रस्तावित सतत-मूल्यांकन-

(क) अधिन्यास (असाइनमेंट) एवं मौखिकी — 15 अंक

अथवा

किसी एक छन्द अथवा अलङ्कार के लक्षण एवं न्यूनतम 10 उदाहरणों (संगति सहित) के संकलन से संबंधित परियोजना कार्य एवं मौखिकी

अथवा

प्रदत्त अपठित श्लोकों में छन्द एवं अलङ्कार-निर्धारण विषयक प्रायोगिकी

(ख) लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ / लघु-उत्तरीय) — 10 अंक

Course prerequisites:

सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)

.....

Suggested equivalent online courses:

.....

Further Suggestions:

.....

Programme/Class: Bachelor कार्यक्रम/वर्ग- स्नातक डिग्री	Year : Third वर्ष - तृतीय	Semester : V सेमेस्टर - पञ्चम
विषय - संस्कृत		
प्रश्नपत्रकोड - A020501T	प्रश्नपत्र शीर्षक- प्रथम-प्रश्नपत्र - वैदिक-वाङ्मय एवं भारतीय-दर्शन	

Course outcomes: अधिगम उपलब्धियाँ -

- वैदिक-वाङ्मय एवं संस्कृति का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- वैदिक एवं औपनिषदिक-संस्कृति के प्रति गौरवबोध होगा।
- वेदोक्त संदेशों एवं मूल्यों के माध्यम से आचरण का उदात्तीकरण होगा।

- उपनिषद् का सामान्य-परिचय एवं निहित उपदेशों का अवबोध होगा।
- औपनिषदिक कर्म-संयम भक्ति एवं त्याग-मूलक संस्कृति से परिचित होंगे।
- वैदिक एवं औपनिषदिक-संस्कृति के प्रति गौरवबोध होगा वैदिक-सूक्तों के माध्यम से विद्यार्थियों को तत्कालीन आध्यात्मिक, सामाजिक एवं राष्ट्रिय-परिदृश्य का निदर्शन होगा।
- भारतीय-दार्शनिकतत्त्वों का सामान्य-ज्ञान प्राप्त होगा।
- दार्शनिकतत्त्वों में अनुस्यूत गूढ़ार्थ-बोध होगा।
- दार्शनिकतत्त्वों के प्रति विश्लेषणात्मक एवं तार्किक-क्षमता का विकास होगा।
- दर्शन में विद्यमान नैतिक एवं कल्याणपरक तथ्यों से आत्मोत्कर्ष की अभिप्रेरणा प्राप्त होगी।
- भारतीय-दर्शन में निहित उद्देश्यों एवं ज्ञान को आचरण में समाहित करने हेतु अभिप्रेरित होंगे।
- गीताज्ञान रहस्य द्वारा सृष्टि-कल्याणार्थ भाव विकसित होंगे।

Credits: 5	Core Compulsory
Max. Marks: 25+75	Min. Passing Marks:

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): L-T-P: 5-0-0.

Unit इकाई	Topics पाठ्यविषय	No. of Lectures व्याख्यान-संख्या
	प्रथम-भाग (PART-1)	
I	वैदिकवाङ्मय का सामान्य परिचय (संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् एवं वेदाङ्ग)	9
II	ऋग्वेदसंहिता- अग्निसूक्त (1.1), विष्णुसूक्त (1.154), पुरुषसूक्त (10.90), हिरण्यगर्भसूक्त (10.121), वाक्सूक्त (10.125) व्याख्या एवं देवता-परिचय	9
III	यजुर्वेदसंहिता-शिवसंकल्पसूक्त अथर्ववेदसंहिता - पृथ्वीसूक्त (12.1) (1 से 12 मन्त्र), सांमनस्यसूक्त (3.30) व्याख्या एवं सम्बधित प्रश्न	9
IV	ईशावास्योपनिषद् व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न	9
	द्वितीय भाग (PART-2)	
V	भारतीय-दर्शन का सामान्य-परिचय। दर्शन का अर्थ एवं महत्त्व आस्तिक-दर्शन - सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा एवं वेदांत नास्तिक-दर्शन - चार्वाक, जैन और बौद्ध।	9

	(परिचयात्मक प्रश्न)	
VI	श्रीमद्भगवतगीता- द्वितीय-अध्याय व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न	10
VII	तर्कसङ्ग्रह (आरंभ से प्रत्यक्षखंडपर्यन्त) सूत्रों का अनुवाद मात्र	10
VIII	तर्कसङ्ग्रह (अनुमान से समाप्तिपर्यन्त) सूत्रों का अनुवाद मात्र	10

संस्तुत ग्रन्थ -

- ईशावास्योपनिषद्, डॉ शिवप्रसाद द्विवेदी, चौखंबा प्रकाशन, वाराणसी
- ईशावास्योपनिषद्, गीता प्रेस, गोरखपुर, 1994
- ऋग्वेदसंहिता, राम गोविंद त्रिवेदी, चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी
- ऋक्सूक्त संग्रह, हरिदत्त शास्त्री, साहित्य भंडार, मेरठ
- ऋक्सूक्त-सौरभ, डॉ आर.के. लौ, ज्ञान प्रकाशन, मेरठ
- सूक्तसंकलन, प्रोफेसर विश्वंभरनाथ त्रिपाठी, चौखंबा प्रकाशन, वाराणसी
- सूक्तसंकलन, डॉ उमेशचंद्र पांडे, प्राच्य भारती प्रकाशन, गोरखपुर
- वेदामृतमंजूषिका, डॉ प्रयाग नारायण मिश्र, प्रकाशन केन्द्र ,लखनऊ
- वैदिक-साहित्य एवं संस्कृति, वाचस्पति गैरोला, चौखंबा प्रकाशन, वाराणसी
- वैदिक-साहित्य का इतिहास, डॉ करण सिंह, साहित्य भंडार मेरठ,
- वैदिक-साहित्य की रूपरेखा, प्रो. राममूर्ति शर्मा, चौखंबा प्रकाशन, वाराणसी
- वैदिक-साहित्य एवं संस्कृति, आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखंबा प्रकाशन
- श्रीमद्भगवद्गीता, (सम्पा०) गजानन शंभू साधले शास्त्री,परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली, 1985
- श्रीमद्भगवद्गीता, हरिकृष्णदास गोयन्दका, गीता प्रेस, गोरखपुर, 2009
- तर्कसंग्रह, अन्नम्भट्ट, (व्या०) चंद्रशेखर द्विवेदी, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा
- तर्कसंग्रह, अन्नम्भट्ट, (व्या०) केदारनाथ त्रिपाठी, चौखंबा प्रकाशन, वाराणसी
- भारतीय-दर्शन की भूमिका, रामानंद तिवारी, भारती मंदिर, भरतपुर, 1958
- भारतीय-दर्शन, जगदीशचंद्र मिश्र, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2010
- भारतीय-दर्शन, आलोचन और अनुशीलन, चंद्रधर शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2004
- भारतीय-दर्शन का इतिहास, एस.एन. दासगुप्ता (अनु) कलानाथ शास्त्री एवं सुधीर कुमार (पांच भागों में), राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 1969-1989
- भारतीय-दर्शन, एस. राधाकृष्णन, (अनु०) नंदकिशोर गोभिल, राजपाल एंड संस, दिल्ली, 1989
- भारतीय-दर्शन की रूपरेखा, एम.हिरियन्ना, (अनु०) गोवर्धन भट्ट, मंजू गुप्त एवं सुखबीर चौधरी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1965

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)

.....

प्रस्तावित सतत-मूल्यांकन- (क) वैदिक-मंत्रों का शुद्ध एवं स्वर-उच्चारण (भावार्थ-सहित) 15 अंक अथवा अधिन्यास (असाइनमेंट) एवं मौखिकी (ख) लिखित-परीक्षा (वस्तुनिष्ठ /लघुउत्तरीय) 10 अंक
Course prerequisites: **सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)** .....
Suggested equivalent online courses: .....
Further Suggestions: .....

Programme/Class: **Bachelor** कार्यक्रम /वर्ग- **स्नातक डिग्री**	Year: **Third** वर्ष- **तृतीय**	Semester:**V** सेमेस्टर- **पञ्चम**
विषय - **संस्कृत**		
प्रश्नपत्रकोड-A020502T	प्रश्नपत्रशीर्षक- **द्वितीय-प्रश्नपत्र - व्याकरण एवं भाषाविज्ञान**	

Course outcomes: अधिगम-उपलब्धियाँ-

- भाषाविज्ञान के उद्भव एवं विकास का सामान्य-ज्ञान प्राप्त होगा।
- संस्कृतभाषा एवं व्याकरण की वैज्ञानिकता का अवबोध होगा।
- भाषा एवं भाषाविज्ञान की उपयोगिता एवं महत्त्व से सुपरिचित होंगे।
- ध्वनि के प्रारंभिक एवं वर्तमान स्वरूप एवं ध्वनि-परिवर्तन के कारणों के प्रति विश्लेषणात्मक दृष्टि विकसित होगी।
- पदों की सिद्धि-प्रक्रिया के माध्यम से शब्द-निर्माण की वैज्ञानिकता से परिचित होंगे।
- संस्कृत-भाषा के शुद्ध-उच्चारण एवं लेखन का कौशल विकसित होगा।

Credits: 5	**Core Compulsory**
Max. Marks: 25+75	Min. Passing Marks:
Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): L-T-P: 5-0-0	

Unit इकाई	Topics पाठ्यविषय	No. of Lectures व्याख्यान-संख्या
I	**धातुरूपसिद्धि (लघु-सिद्धांत-कौमुदी)**	11

	भू एवं एध् (सूत्रव्याख्या एवं रूपसिद्धि) पा, गम, कृ - रूपस्मरण	
II	रूपसिद्धि एवं रूपस्मरण (लघु-सिद्धांत-कौमुदी) पुल्लिंग - राम (सूत्रव्याख्या एवं रूपसिद्धि) सर्व, हरि, सखि - रूपस्मरण	10
III	स्त्रीलिंग - रमा (सूत्रव्याख्या एवं रूपसिद्धि) सर्वा, मति, नदी - रूपस्मरण	9
IV	नपुंसकलिंग - ज्ञान, वारि (सूत्रव्याख्या एवं रूपसिद्धि) मधु, दधि - रूपस्मरण	9
V	हलन्त-पुल्लिंग - राजन् (सूत्रव्याख्या एवं रूपसिद्धि) इदम्, तद्, अस्मद्, युष्मद् - रूपस्मरण	9
VI	हलन्त-नपुंसकलिंग - इदम् (सूत्रव्याख्या एवं रूपसिद्धि) हलन्त-स्त्रीलिंग - अपस्, इदम्, किम् - रूपस्मरण	9
VII	भाषाविज्ञान का स्वरूप, भाषाविज्ञान के मुख्य अङ्ग एवं उपादेयता, भाषा की परिभाषा एवं स्वरूप, भाषा की विशेषताएं, भावाभिव्यक्ति के साधन एवं भाषा के अनेकरूप (बोली, भाषा, विभाषा)	9
VIII	भाषा का उद्भव एवं विकास, भाषापरिवर्तन की दिशाएं एवं कारण, ध्वनि परिवर्तन की दिशाएं एवं कारण	9

संस्तुत ग्रन्थ-

- लघु-सिद्धांत-कौमुदी, वरदराज, भैमी व्याख्या, भीमसेन शास्त्री (1-6 भाग), भैमी प्रकाशन, दिल्ली 1993
- लघु-सिद्धांत-कौमुदी, गोविंद प्रसाद शर्मा एवं आचार्य रघुनाथ शास्त्री, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन
- लघु-सिद्धांत-कौमुदी, डॉ उमेश चंद्र पांडे, चौखंबा प्रकाशन
- लघु-सिद्धांत-कौमुदी, डॉ रामकृष्ण आचार्य, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
- कृदन्त सूत्रावली, बृजेश कुमार शुक्ल, प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ
- भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, द्वादश संस्करण 2010
- भाषाविज्ञान, भोलानाथ तिवारी, किताब महल प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)

.....

प्रस्तावित सतत-मूल्यांकन-

(क) अधिन्यास (असाइनमेंट) एवं मौखिकी

अथवा

संस्कृत-संभाषण 15 अंक

(ख) लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ लघु-उत्तरीय) 10 अंक

Course prerequisites: सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL) .....
Suggested equivalent online courses: .....
Further Suggestions: .....

Programme/Class: Bachelor कार्यक्रम /वर्ग- स्नातक डिग्री	Year : Third वर्ष - तृतीय	Semester : VI सेमेस्टर - षष्ठ
विषय - संस्कृत		
प्रश्न पत्र कोड-A020601T	प्रश्नपत्र शीर्षक- प्रथम प्रश्नपत्र - आधुनिक संस्कृत-साहित्य	

Course outcomes: अधिगम उपलब्धियाँ-

- आधुनिक संस्कृत-कवियों से सुपरिचित होंगे।
- नवीन-बिम्बविधानों एवं नवीन-विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।
- आधुनिक संस्कृत-साहित्य के बाल-साहित्य से परिचित होते हुए संस्कृत-शिक्षण की सरलतम विधि के प्रति उन्मुख होंगे।
- आधुनिक संस्कृत-साहित्य में विद्यमान नैतिक एवं कल्याणपरक तथ्यों से आत्मोत्कर्ष की अभिप्रेरणा प्राप्त होगी।
- आधुनिक संस्कृत-साहित्य में निहित उद्देश्यों एवं ज्ञान को आचरण में समाहित करने हेतु अभिप्रेरित होंगे।

Credits: 5	Core Compulsory
Max. Marks: 25+75	Min. Passing Marks:
Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): L-T-P: 5-0-0	

Unit इकाई	Topics पाठ्यविषय	No. of Lectures व्याख्यान-संख्या
I	**आधुनिक संस्कृत-साहित्य के प्रमुख कवि एवं उनकी कृतियों का सामान्य-परिचय -** **प्रभुदत्त स्वामी, वासुदेव द्विवेदी शास्त्री, श्रीनिवास रथ, प्रो. रेवाप्रसाद द्विवेदी, अभिराज राजेन्द्र मिश्र, रमाकांत शुक्ल, डॉ. गणेशदत्त शर्मा**	10

II	आधुनिक-महाकाव्यम् विवेकानन्द-चरितामृतम् (अष्टमः सर्गः) डॉ. गणेशदत्त शर्मा	10
III	आधुनिक काव्यम् पूर्व-भारतम् (अष्टादशः सर्गः) - आचार्य प्रभुदत्त स्वामी	9
IV	आधुनिक-नाटकम् क्षत्रपतिः-साम्राज्यम् (प्रथम-अंक) – श्री मूलशंकर माणिकलाल "याज्ञिक"	9
V	संस्कृत-उपन्यासः पद्मिनी (प्रथम एवं द्वितीय विराम) - मोहनलाल शर्मा पांडे	9
VI	संस्कृत-गीतिकाव्यम् भाति मे भारतम् (1 - 50 पद्य)- डॉ. रमाकान्त शुक्ल	10
VII	संस्कृत-कथा इक्षुगन्धा-कथासंग्रह से इक्षुगन्धा-कथा - अभिराज राजेन्द्र मिश्र	9
VIII	संस्कृत-सुभाषितम् दीपमालिका, पं. वासुदेव द्विवेदी शास्त्री	9

टिप्पणी - सभी ग्रन्थों से व्याख्यात्मक एवं समीक्षात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे।

संस्तुत ग्रन्थ-

- ईक्षुगन्धा, प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र, विजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद
- विवेकानन्द-चरितामृतम् - डॉ. गणेशदत्त शर्मा, उर्मिला प्रकाशन, साहिबाबाद
- भाति मे भारतम्, डॉ. रमाकान्त शुक्ल, देववाणी प्रकाशन, वाणी विहार, नई दिल्ली - 6
- क्षत्रपति साम्राज्यम् - श्रीमूलशंकर माणिकलाल याज्ञिक, व्याख्याकार - डा. नरेश झा, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
- पूर्व-भारतम्, आचार्य प्रभुदत्त स्वामी, साहित्य भण्डार, मेरठ
- दीपमालिका, वासुदेव द्विवेदी शास्त्री, सार्वभौम संस्कृत प्रचार संस्थान, वाराणसी
- पद्मिनी, मोहनलाल शर्मा पांडे, पांडे प्रकाशन, जयपुर
- संस्कृत-वाङ्मय का बृहद्-इतिहास, सप्तमखंड- आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास, श्री बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ, प्रथम संस्करण-2000
- आधुनिक संस्कृत-साहित्य संदर्भ सूची, (संपादक) राधावल्लभ त्रिपाठी, राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान, नई दिल्ली
- आधुनिक संस्कृत-काव्य की परिक्रमा, मंजूलता शर्मा, राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान, नई दिल्ली
- http://www.sanskrit.nic.in/ASSP/index.html

This course can be opted as an elective by the students of following subjects: सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL).....
प्रस्तावित सतत-मूल्यांकन- (क) आधुनिक संस्कृत-पुस्तक-समीक्षा एवं मौखिकी 15 अंक **अथवा** आधुनिक संस्कृत-साहित्य का सर्वेक्षण एवं मौखिकी (ख) लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ लघु-उत्तरीय) 10 अंक
Course prerequisites: **सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)** .....
Suggested equivalent online courses: .....
Further Suggestions: .....

Programme/Class: Bachelor कार्यक्रम /वर्ग- **स्नातक डिग्री**	Year : Third वर्ष- तृतीय	Semester: six सेमेस्टर - **षष्ठ**
विषय - संस्कृत		
प्रश्नपत्रकोड-A020602T	प्रश्नपत्र शीर्षक- द्वितीय प्रश्नपत्र- क (वैकल्पिक) - योग एवं प्राकृतिक-चिकित्सा	

Course outcomes: अधिगम उपलब्धियाँ-

- भारतीय-योगशास्त्र के प्राचीन एवं वैज्ञानिक-ज्ञान से लाभान्वित होंगे।
- योगशास्त्र के मूलभूत सिद्धांतों को जानकर योग की महत्ता से परिचित होंगे।
- योग के वास्तविक स्वरूप के अवबोध द्वारा योग को जीवन में समाहित करने हेतु प्रेरित होंगे।
- योग के षट्कर्म, आसन, प्राणायाम एवं बन्धों के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक दोनों पक्षों को समानरूप से सीख सकेंगे।
- योग एवं प्राकृतिक-चिकित्सा के अनुप्रयोग द्वारा स्वस्थ-समाज का निर्माण कर सकने में समर्थ होंगे।

Credits: 5	Core Compulsory
Max. Marks: 25+75	Min. Passing Marks:
Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): L-T-P: 5-0-0	

Unit इकाई	Topics पाठ्यविषय	No. of Lectures व्याख्यान-संख्या
I	योग का अर्थ, परिभाषा एवं उपयोगिता। महर्षि पतञ्जलि व गुरु गोरखनाथ का परिचय। योग के प्रकार - ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग व राजयोग का सामान्य परिचय। प्राकृतिक-चिकित्सा क्या है? और इसके सिद्धांत व उपयोगिता।	10
II	योगसूत्र - समाधिपाद (सूत्र 1 से 33 तक)	10
III	योगसूत्र - साधनपाद (सूत्र 1 से 11 एवम् 28 से 55) योगसूत्र - विभूतिपाद (सूत्र 1 से 8)	10
IV	हठप्रदीपिका - प्रथम-उपदेश (सूत्र 1-16 एवम् 57-67)	9
V	हठप्रदीपिका - प्रथम-उपदेश (सूत्र 17-54)	9
VI	हठप्रदीपिका - द्वितीय-उपदेश (सूत्र 21-36) हठप्रदीपिका - तृतीय-उपदेश (सूत्र 54-81)	9
VII	हठप्रदीपिका - द्वितीय उपदेश (सूत्र 1-20 एवम् 37-68)	9
VIII	प्राकृतिक चिकित्सा की विधियां व लाभ - मृत्तिका-स्नान, मृत्तिका-पट्टी, वाष्प-स्नान, कटि-स्नान, एनिमा, सूर्यकिरण-चिकित्सा, अभ्यङ्ग, उपवास।	9

संस्तुत ग्रन्थ-

- पातञ्जलयोगदर्शनम्, पतञ्जलि-कृत योगसूत्र, व्यास-भाष्य, वाचस्पति मिश्र कृत तत्त्ववैशारदी एवं विज्ञानभिक्षु कृत योगवार्त्तिक सहित, (संपादक) नारायण मिश्र, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी,1981
- योगदर्शन, हरिकृष्णदास गोयन्दका, गीता प्रेस, गोरखपुर
- पातञ्जलयोगदर्शनम्, सुरेशचंद श्रीवास्तव, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
- हठप्रदीपिका, कैवल्य धाम, लोनावला, पुणे
- प्राकृतिक आयुर्विज्ञान, राकेश जिन्दल, आरोग्य सेवा प्रकाशन, उमेश पार्क, मोदीनगर
- यज्ञ-चिकित्सा, ब्रह्मवर्चस्, शांतिकुंज, हरिद्वार
- योग तथा मानसिक-स्वास्थ्य, पी.डी. मिश्र, रॉयल बुक कंपनी, लखनऊ
- योग एवं स्वास्थ्य, पी. डी. मिश्र, रैपिडेक्स बुक्स, पुस्तक महल
- सूर्यकिरण चिकित्सा-विज्ञान, अमर जीत, खंडेलवाल प्रकाशन, जयपुर
- नेचर क्योर फिलासफी एंड मेथड्स, पी.डी. मिश्र, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)

.....

प्रस्तावित सतत-मूल्यांकन- (क) योगासनों का प्रदर्शन 15 अंक अथवा अधिन्यास (असाइनमेंट) एवं मौखिकी (ख) लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ लघु-उत्तरीय) 10 अंक
Course prerequisites: **सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)** .....
Suggested equivalent online courses: .....
Further Suggestions: .....

अथवा

Programme/Class: Bachelor कार्यक्रम /वर्ग- **स्नातक डिग्री**	Year: Third वर्ष- **तृतीय**	Semester: **Six** सेमेस्टर - **षष्ठ**
विषय-संस्कृत		
प्रश्नपत्र कोड-A0206003T	प्रश्नपत्र शीर्षक- **द्वितीय प्रश्नपत्र-ख (वैकल्पिक) - आयुर्वेद एवं स्वास्थ्यविज्ञान**	

Course outcomes: अधिगम उपलब्धियाँ-

- भारतीय-प्राच्यज्ञान की अद्भुत देन आयुर्वेद का सामान्य-ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- मानव-स्वास्थ्य एवं रोग-निवारण हेतु आयुर्वेद के मूलभूत-सिद्धांतों से सुपरिचित होंगे।
- वर्तमान-समय में आयुर्वेद की आवश्यकता एवं महत्त्व से अवगत होते हुए मानव-कल्याणार्थ अनुप्रयोग हेतु प्रेरित होंगे।
- अष्टाङ्ग-आयुर्वेद के ज्ञान द्वारा स्वस्थ-जीवनशैली अपनाने हेतु अग्रसर होंगे।

Credits: 5	Core **Compulsory**
Max. Marks: 25+75	Min. Passing Marks:

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): L-T-P: 5-0-0		
Unit इकाई	Topics पाठ्यविषय	No. of Lectures व्याख्यान-संख्या
I	आयुर्वेद का सामान्य-परिचय, उद्भव एवं विकास प्रमुख-आचार्य - चरक, सुश्रुत, वाग्भट, माधव, शार्ङ्गधर, भावमिश्र	10
II	आयुर्वेद का अर्थ एवं परिभाषा, मूलभूत-सिद्धांत, वर्तमान काल में उपयोगिता एवं महत्त्व, अष्टाङ्ग-आयुर्वेद	11
III	चरक-संहिता - सूत्रस्थान प्रथम-अध्याय (श्लोक 41 से 92)	9
IV	चरक-संहिता - सूत्रस्थान प्रथम-अध्याय (श्लोक 93 से समाप्ति-पर्यंत)	9
V	चरक-संहिता - सूत्रस्थान नवम-अध्याय	9
VI	चरक-संहिता - सूत्रस्थान दशम-अध्याय	9
VII	अष्टाङ्गहृदयम् - वाग्भट सूत्रस्थानम्- प्रथम-अध्याय 1-19	9
VIII	अष्टाङ्गहृदयम् - वाग्भट सूत्रस्थानम्- प्रथम-अध्याय 20-44	9

संस्तुत ग्रन्थ-

- चरक-संहिता, (सम्पा०) ब्रह्मानंद त्रिपाठी, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2005
- अष्टाङ्गहृदयम् ,वाग्भट, (सम्पा०) ब्रह्मानंद त्रिपाठी, चौखंबा संस्कृत प्रतिष्ठान दिल्ली, पुनर्मुद्रित 2014
- आयुर्वेद का बृहद्-इतिहास, अत्रिदेव विद्यालङ्कार, हिन्दीसमिति, उत्तरप्रदेश शासन लखनऊ, द्वितीय संस्करण 1976
- संस्कृत-वाङ्मय का बृहद्-इतिहास, बलदेव उपाध्याय, आयुर्वेद का इतिहास (सप्तदश-खण्ड), उत्तरप्रदेश-संस्कृत-संस्थान, लखनऊ 2006
- आयुर्वेद का वैज्ञानिक-इतिहास, आचार्य प्रियव्रत शर्मा, चौखंबा प्रकाशन,वाराणसी
- आयुर्वेद-इतिहास एवं परिचय, विद्याधर शुक्ल एवं रविदत्त त्रिपाठी, चौखंबा, वाराणसी
- संस्कृत-साहित्य में आयुर्वेद, अत्रिदेव विद्यालङ्कार, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी प्रथम-संस्करण, 1956

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)

.....

प्रस्तावित सतत-मूल्यांकन-

(क) अधिन्यास (असाइनमेंट) / पत्र-प्रस्तुतीकरण एवं मौखिकी अथवा प्रदत्त-समस्या का निदान आदि (प्रायोगिक)	15 अंक
(ख) लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ लघु-उत्तरीय)	10 अंक

Course prerequisites:

सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)

.....

Suggested equivalent online courses:

.....

Further Suggestions:

.....

अथवा

Programme/Class: Bachelor कार्यक्रम /वर्ग- स्नातक डिग्री	Year: Third वर्ष- तृतीय	Semester: Six सेमेस्टर - षष्ठ
विषय - संस्कृत		
प्रश्नपत्रकोड-A020604T	प्रश्नपत्र शीर्षक- द्वितीय प्रश्नपत्र-ग (वैकल्पिक)- भारतीय वास्तुशास्त्र	

Course outcomes: अधिगम उपलब्धियाँ-

- भारतीय वास्तुशास्त्र का सामान्य-परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- भारतीय प्राचीन-ज्ञान-धरोहर को जानने समझने की जिज्ञासा उत्पन्न होगी।
- वास्तुशास्त्र के महत्त्व एवं वर्तमान उपयोगिता से परिचित होंगे।
- वास्तुशास्त्र के मूलभूत-सिद्धांतों के ज्ञान द्वारा उनके अनुप्रयोग का कौशल विकसित होगा।

Credits: 5	Core Compulsory
Max. Marks: 25+75	Min. Passing Marks:

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): L-T-P: 5-0-0

Unit इकाई	Topics पाठ्यविषय	No. of Lectures व्याख्यान-संख्या
I	वास्तुशास्त्र का सामान्य-परिचय महत्त्व एवं वर्तमान प्रासंगिकता	10

II	वास्तुसौख्यम् (टोडरमल्ल विरचित) वास्तुसौख्यम् - प्रथम-भाग वास्तुप्रयोजन, वास्तुस्वरूप (श्लोक 4 से 13) वास्तुसौख्यम् - द्वितीय-भाग भूमिपरीक्षण, दिक्साधन, निवास हेतु स्थाननिर्वाचन (श्लोक 14 से 22) वास्तुसौख्यम्- तृतीय-भाग गृहपर्यावरण, वृक्षारोपण, शल्यशोधन (श्लोक 31-49, 74-82)	10
III	वास्तुसौख्यम्- चतुर्थ-भाग षड्वर्ग-परिशोधन, वास्तुचक्र, ग्रहवास्तु, शिलान्यास (श्लोक 83-102, 107-112) वास्तुसौख्यम्- षष्ठ-भाग पञ्चविधगृह, शालालिन्दप्रमाण, वीथिका-प्रमाण (श्लोक 171-194, 195-196) वास्तुसौख्यम्- सप्तम-भाग द्वार-प्रमाण, स्तम्भ-प्रमाण, पञ्च चतुःशालागृह- सर्वतोभद्र, नन्द्यावर्त, वर्धमान, स्वस्तिक, रुचक (श्लोक 203-217)	10
IV	वास्तुसौख्यम्- अष्टम-भाग एकाशीतिपदवास्तुचक्र, मर्मस्थान (श्लोक 287-302, 305-307) वास्तुसौख्यम्- नवम-भाग वासदिशानिरुपण, द्वारफल, द्वारवेधफल (श्लोक 322-335, 359-369)	9
V	मुहूर्तचिन्तामणि, वास्तुप्रकरण, (श्लोक 01 से 14)	9
VI	मुहूर्तचिन्तामणि, वास्तुप्रकरण (श्लोक 15 से 29)	9
VII	मुहूर्तचिन्तामणि, गृहप्रवेशप्रकरण	9
VIII	भारतीय वास्तुशास्त्र तथा आधुनिक वास्तुविज्ञान की तुलनात्मक-समीक्षा	9

संस्तुत ग्रन्थ-

- वास्तुसौख्यम्, टोडरमल्ल, (सम्पा.) कमलाकांत शुक्ल, शिक्षण शोध प्रकाशन संस्थान, वाराणसी, 1996
- मुहूर्तचिन्तामणि, श्रीराम, पीयूषधारा टीका-सहित, मोतीलाल बनारसी दास,दिल्ली
- मुहूर्तचिन्तामणि, श्रीराम, श्रीदुर्गा पुस्तक भण्डार, प्रयागराज
- भारतीय वास्तुशास्त्र, शुकदेव चतुर्वेदी, श्री लालबहादुरशास्त्री, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली
- वास्तुप्रबोधिनी, विनोद शास्त्री और सीताराम शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
- बृहद्-वास्तुमाला, राममनोहर द्विवेदी और ब्रह्मानंद त्रिपाठी, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2012

• वास्तुसार, देवीप्रसाद त्रिपाठी, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली, 2015
This course can be opted as an elective by the students of following subjects: **सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)** .....
प्रस्तावित सतत-मूल्यांकन - **(क)** पिण्डशोधन, भवन-निर्माण की आंतरिक-संरचना (प्रायोगिक) 15 अंक अथवा अधिन्यास (असाइनमेंट)/ पत्र-प्रस्तुतीकरण एवं मौखिकी **(ख)** लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ लघु-उत्तरीय) 10 अंक
Course prerequisites: **सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)** .....
Suggested equivalent online courses: .....
Further Suggestions: .....

अथवा

Programme/Class: **Bachelor** कार्यक्रम /वर्ग- **स्नातक डिग्री**	Year: Third वर्ष- तृतीय	Semester: VI सेमेस्टर - षष्ठ
विषय-संस्कृत		
प्रश्नपत्रकोड-A020605T	प्रश्नपत्रशीर्षक- **द्वितीय प्रश्नपत्र-घ (वैकल्पिक)- ज्योतिषशास्त्र के मूलभूत-सिद्धांत**	

Course outcomes: अधिगम उपलब्धियाँ-

- भारतीय प्राच्य-ज्ञान के प्रति अभिरुचि उत्पन्न होगी।
- भारतीय ज्योतिष-शास्त्र का सामान्य-ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- ज्योतिष के विभिन्न-सिद्धांतों के ज्ञान के माध्यम से विश्लेषण-क्षमता जागृत होगी।
- पंचाङ्ग-अवलोकन एवं निर्माण-कौशल का विकास होगा।

Credits: 5	Core Compulsory
Max. Marks: 25+75	Min. Passing Marks:

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): L-T-P: 5-0-0.

Unit इकाई	Topics पाठ्यविषय	No. of Lectures व्याख्यान-संख्या
I	ज्योतिषशास्त्र का सामान्य-परिचय, उद्भव एवं विकास त्रिस्कन्ध-ज्योतिष-सिद्धांत, संहिता, होरा	9
II	ज्योतिषचन्द्रिका - संज्ञाप्रकरण (श्लोक 1 से 40)	10
III	ज्योतिषचन्द्रिका - संज्ञाप्रकरण (श्लोक 41 से 80)	10
IV	ज्योतिषचन्द्रिका - संज्ञाप्रकरण (श्लोक 81 से 115)	10
V	शीघ्रबोध - प्रथम-प्रकरण	9
VI	शीघ्रबोध - द्वितीय-प्रकरण	9
VII	शीघ्रबोध -तृतीय-प्रकरण	9
VIII	शीघ्रबोध - चतुर्थ-प्रकरण	9

संस्तुत ग्रन्थ-

- ज्योतिषचन्द्रिका, रेवतीरमण शर्मा, (संपा) कान्ता भाटिया, भारतीय बुक कॉरपोरेशन, दिल्ली
- शीघ्रबोध, काशीनाथ, सम्पा. खूबचन्दशर्मा गौड़, नवलकिशोर बुक डिपो, लखनऊ
- शीघ्रबोध, काशीनाथ, सम्पा. प्रो. बृजेशकुमार शुक्ल, रायल बुक डिपो, लखनऊ
- ज्योतिर्विज्ञानसन्दर्भसमालोचनिका, प्रो. बृजेशकुमार शुक्ल, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली
- बृहत्-संहिता, अच्युतानंद झा (अनु०), चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी
- बृहत्-संहिता, राधाकृष्णन भट्ट (अनु०), मोतीलाल बनारसीदास वॉल्यूम 1 और 2, दिल्ली
- भारतीय-ज्योतिष, शंकर बालकृष्ण दीक्षित शिवनाथ झारखंडी (अनु०) हिन्दी समिति, उत्तरप्रदेश
- भारतीय-ज्योतिष, नेमीचंद शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
- ब्रह्मांड एवं सौर-परिवार, त्रिपाठी देवी प्रसाद, दिल्ली
- भुवनकोश, त्रिपाठी देवी प्रसाद, दिल्ली

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)

.....

प्रस्तावित सतत-मूल्यांकन -	
(क) अधिन्यास (असाइनमेंट) एवं मौखिकी	15 अंक
अथवा	
पञ्चाङ्गावलोकन परीक्षा	
(ख) लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ लघु-उत्तरीय)	10 अंक
Course prerequisites: **सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)**	
Suggested equivalent online courses:	
Further Suggestions:	

अथवा

Programme/Class: **Bachelor** कार्यक्रम /वर्ग- स्नातक डिग्री	Year: **Third** वर्ष - तृतीय	Semester: VI सेमेस्टर - षष्ठ
विषय - संस्कृत		
प्रश्नपत्रकोड-A020606T	प्रश्नपत्र शीर्षक - **द्वितीय प्रश्नपत्र-ङ (वैकल्पिक) - नित्य-नैमित्तिक-अनुष्ठान**	

Course outcomes: अधिगम उपलब्धियाँ-

- विद्यार्थी भारतीय-पारंपरिक-कर्मकांड एवं सांस्कृतिक-मूल्यों से परिचित होंगे।
- नित्य-नैमित्तिक-अनुष्ठानविधि को जानकर जीवन को नियमबद्ध एवं आचरणशील बनाने में समर्थ होंगे।
- भारतीय-कर्मकांड के प्रामाणिक-शास्त्रीयरूप से परिचित होकर उसकी व्यावहारिक-उपयोगिता जानने योग्य बनेंगे।
- सामान्य-अनुष्ठान संपन्न कराने योग्य-कुशल और पौरोहित्य-कर्म-विशारद बनेंगे।
- आत्मनिर्भर-भारत की संकल्पना को साकार करने में सक्षम एवं आत्मनिर्भर बनेंगे।

Credits: 5	Core Compulsory
Max. Marks: 25+75	Min. Passing Marks:

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): L-T-P: **5-0-0.**

Unit इकाई	Topics पाठ्यविषय	No. of Lectures व्याख्यान-संख्या
I	**नित्यविधि(प्रातरुत्थान, स्नान, संध्या, तर्पण तथा पञ्चयज्ञ)**	10
II	**स्वस्तिवाचन, संकल्प, गौरी-गणेश-पूजन तथा वरुणकलश -स्थापन**	10

III	षोडशोपचार-पूजन, कुशकंडिका-विधि, मण्डप-कुण्ड-निर्माण तथा होम-विधि	10
IV	रुद्राभिषेक, महामृत्युञ्जय-जप तथा नवचंडी-विधान	9
V	नवग्रह-शांति, मूलगण्डान्तशान्ति, दुःस्वप्नशान्ति तथा वैधव्योपशान्ति	9
VI	प्राग्जन्म तथा जातकर्म-संस्कार, अन्नप्राशन तथा चौल-कर्म	9
VII	यज्ञोपवीत तथा विवाह-संस्कार	9
VIII	गृहारम्भ तथा गृहप्रवेश	9

संस्तुत ग्रन्थ-

- पारस्करगृह्यसूत्र, संपा. सुधाकर मालवीय, चौखंबा संस्कृत संस्थान, वाराणसी
- कर्म-कौमुदी, डॉ बृजेश कुमार शुक्ल, नाग प्रकाशक, दिल्ली 2001
- कर्मठगुरु, मुकुंद बल्लभ मिश्र, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली 2001
- आपस्तम्बीयकर्म मीमांसा, प्रयाग नारायण मिश्र, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली
- हिन्दु-संस्कार, राजबली पांडे चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी 1995
- धर्मशास्त्र का इतिहास, प्रथम-भाग, अर्जुन चौबे, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ
- संस्कार-प्रकाश, भवानीशङ्कर त्रिवेदी, लालबहादुरशास्त्री केंद्रीय संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली
- पौरोहित्यकर्म-प्रशिक्षक, उत्तरप्रदेश-संस्कृत-संस्थान, लखनऊ
- नित्यकर्म-पूजा-प्रकाश, गीता प्रेस, गोरखपुर
- धर्म-शास्त्र का इतिहास, पांडुरङ्ग वामन काणे, (अनु०) अर्जुन चौबे कश्यप, प्रथम-भाग, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 1973

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)

प्रस्तावित सतत-मूल्यांकन-

(क) अधिन्यास (असाइनमेंट) एवं मौखिकी (मंत्रोच्चार-परीक्षा)	15 अंक
(ख) लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ/लघु-उत्तरीय)	10 अंक

Course prerequisites:

सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)

.....

Suggested equivalent online courses:

.....

Further Suggestions:

.....

चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

योग, आयुर्वेद, वर्णोच्चारण-शिक्षा एवं सूक्तियाँ (सामान्य-परिचयात्मक)

अधिगम उपलब्धियाँ -

1. भारतीय प्राच्यज्ञान की अद्भुत देन योग एवं आयुर्वेद से लाभान्वित होंगे।
2. योग का तथ्यरक एवं प्रायोगिक ज्ञान दैनिक जीवन में उपयोगी सिद्ध होगा।
3. रोगनिवारण एवं स्वास्थ्यसंरक्षण द्वारा स्वस्थ समाज का निर्माण होगा।
4. वर्णोच्चारण का शिक्षण भाषा की उच्चारणसम्बन्धी शुद्धता का संवाहक होगा।
5. संस्कृत - सूक्तियों का पठन-पाठन जीवन में नैतिक तथा चारित्रिक मूल्यों का आधान करेगा।

4 क्रेडिट, 60 व्याख्यान **(आन्तरिक मूल्याङ्कन 50 + बाह्य मूल्याङ्कन 50 = पूर्णाङ्क-100)**

यूनिट-1 **10 व्याख्यान**

योग का सामान्य-परिचय, अर्थ, परिभाषा एवं इतिहास, योग के प्रकार, योग की उपयोगिता। मिताहार एवं पथ्य-अपथ्य, योगाभ्यास हेतु समय, वातावरण। योग के साधक-बाधक तत्त्व, योग-सिद्धि के लक्षण। हठप्रदीपिका के अनुसार षट्कर्मों एवं आसनों का परिचय, लाभ एवं सावधानियाँ।

यूनिट-2 **10 व्याख्यान**

स्वर-परिचय, इडा, पिङ्गला एवं सुषुम्ना। स्वर-आधारित करणीय-अकरणीय कर्म। प्राणायाम की परिभाषा, हठप्रदीपिका के अनुसार प्राणायामों की विधि, लाभ एवं सावधानियाँ। पातञ्जलयोग सूत्र का परिचय, अष्टांग-योग के अंतर्गत यम-नियम का स्वरूप। अष्टांग-योग के अंतर्गत आसन-प्राणायाम की अवधारणा, प्रत्याहार एवं धारणा का स्वरूप। अष्टांग-योग के अंतर्गत ध्यान एवं समाधि का स्वरूप।

यूनिट-3 **10 व्याख्यान**

आयुर्वेद का परिचय एवं मूलभूत सिद्धान्त। दिनचर्या, ऋतुचर्या एवं सद्वृत्त का स्वास्थ्य-संरक्षण में महत्त्व। मानव शरीर के प्रमुख अवयव, उनकी रचना एवं क्रिया का परिचयात्मक ज्ञान। व्यक्तिगत एवं सामाजिक स्वास्थ्य-संवर्धन के नियम। घरों एवं उनके आसपास पायी जाने वाली औषधियों का सामान्य परिचय।

यूनिट-4 **10 व्याख्यान**

चिकित्सा में प्रयोग होने वाली विभिन्न औषधियों के निर्माण-सम्बन्धी सामान्य-परिचय। किशोरियों की स्वास्थ्य-सम्बन्धी सामान्य समस्याऐं एवं उनके बचाव के उपाय। आयुर्वेद में शल्य-कर्म का परिचय।

आयुर्वेदीय-चिकित्सा के सामान्य सिद्धान्तों का परिचयात्मक-ज्ञान। पञ्चकर्म-चिकित्सा का परिचयात्मक-ज्ञान।

यूनिट-5 **10 व्याख्यान**

वर्णोच्चारण-शिक्षा (स्थान एवं प्रयत्न)

यूनिट-6 **10 व्याख्यान**

जीवनोपयोगी सूक्तियाँ।

पाठ्यक्रम में निर्धारित सूक्तियाँ -

1. भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम। ऋग्वेद 1.89.8
2. यद् भद्रं तन्न आ सुव। ऋग्वेद 5.82.5.
3. तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु। यजुर्वेद 34.1
4. मित्रस्य चक्षुषा भूतानि समीक्षे। यजुर्वेद 36.18
5. पश्येम शरदः शतम्। यजुर्वेद 36.24
6. एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति। ऋग्वेद 1.164.46
7. आचारप्रभवो धर्मः। अनुशासन पर्व 149.137
8. अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मनः सत्येन शुध्यति।
   विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति॥ (मनु 5/109)
9. अन्नदानं परं दानं विद्यादानमतः परम्।
   अन्नेन क्षणिका तृप्तिर्यावज्जीवं च विद्यया॥ (सु र भा - 158/217)
10. अन्यायोपार्जितं द्रव्यं दश वर्षाणि तिष्ठति।
    प्राप्ते चैकादशे वर्षे समूलं च विनश्यति॥ (चा नीतिः- 15/6)
11. अभिवादनशीलस्य नित्यं वृध्दोपसेविनः।
    चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम्॥ (मनु 2/121)
12. अभ्यासेन क्रियाः सर्वाः अभ्यासात् सकलाः कलाः।
    अभ्यासाद् ध्यानमौनादि किमभ्यासस्य दुष्करम्॥ (हठयोगप्रदीपिका)
13. अमन्त्रमक्षरं नास्ति नास्ति मूलमनौषधम्।
    अयोग्यः पुरुषो नास्ति योजकस्तत्र दुर्लभः॥ (सु र भा -156/158)
14. अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
    उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥ (सु र भा -70/1)

15. अर्थनाशं मनस्तापं गृहे दुश्चरितानि च।
वञ्चनं चापमानं च मतिमान्न प्रकाशयेत्॥ (चाणक्य नीतिः- 7/9)

16. अलसस्य कुतो विद्या अविद्यस्य कुतो धनम्।
अधनस्य कुतो मित्रम् अमित्रस्य कुतः सुखम्॥ (सु र भा - 160/320)

17. अवृत्तिकं त्यजेद्देशं वृत्ति सोपद्रवां त्यजेत्।
त्यजेन्मायाविनं मित्रं धनं प्राणाहरं त्यजेत्॥ (सु र भा - 153/29)

18. आचारः कुलमाख्याति देशमाख्याति भाषणम्।
संभ्रमः स्नेहमाख्याति वपुराख्याति भोजनम्॥ (चाणक्य नीति 3/2)

19. काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्।
व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा॥ (सु र भा - 153/23)

20. कोऽतिभारः समर्थानां किं दूरं व्यवसायिनाम्।
को विदेशः सविद्यानां कः परः प्रियवादिनाम्॥ (चा नीति - 3/13)

21. क्षणशः कणशश्चैव विद्यामर्थं च साधयेत्।
क्षणत्यागे कुतो विद्या कणत्यागे कुतो धनम्॥ (सु र भा)

22. क्षमातुल्यं तपो नास्ति न सन्तोषात्परं सुखम्।
न तृष्णायाः परो व्याधिर्न च धर्मो दयापरः॥ (सु र भा - 166/600)

23. गच्छतस्स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः॥ (सु र भा)

24. गते शोको न कर्तव्यो भवितव्यं न चिन्तयेत्।
वर्तमानेन कालेन प्रवर्तन्ते विचक्षणाः॥ (चा नीतिः- 13/2)

25. चक्षुःपूतं न्यसेत्पादं वस्त्रपूतं जलं पिबेत्।
सत्यपूतां वदेद् वाचं मनःपूतं समाचरेत्॥ (सु र भा - 156/141)

26. जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।
स हेतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च॥ (चा नीतिः- 12/21)

27. त्यजेदेकं कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्।
ग्रामं जनपदस्यार्थे ह्यात्माऽर्थे पृथिवीं त्यजेत्॥ (चा नीतिः- 3/10)

28. ददाति प्रतिगृह्णाति गुह्यमाख्याति पृच्छति।
भुङ्क्ते भोजयते चैव षड्विधं प्रीतिलक्षणम्॥ (सु र भा - 159/269)

29. दुर्बलस्य बलं राजा बालानां रोदनं बलम्।
बलं मूर्खस्य मौनित्वं चौराणामनृतं बलम्॥ (सु र भा - 162/393)

30. दुर्लभं संस्कृतं वाक्यं दुर्लभः क्षेमकृत्सुतः।
दुर्लभा सदृशी भार्या दुर्लभः स्वजनः प्रियः॥ (सु र भा - 161/386)

31. देवे तीर्थे द्विजे मन्त्रे दैवज्ञे भेषजे गुरौ।
यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति यादृशी॥ (सु र भा - 168/668)

32. द्वाविमौ पुरुषौ लोके स्वर्गस्योपरि तिष्ठतः।
प्रभुश्च क्षमया युक्तो दरिद्रश्च प्रदानवान्॥ (सु र भा - 155/107)

33. धनिकः श्रोत्रियो राजा नदी वैद्यस्तु पञ्चमः।
पञ्च यत्र न विद्यन्ते न तत्र दिवसं वसेत्॥ (चा नीति - 1/9)

34. न कश्चित् कस्यचिन्मित्रं न कश्चित् कस्यचिद्रिपुः।
व्यवहारेण जायन्ते मित्राणि रिपवस्तथा॥ (सु र भा - 161/346)

35. न कश्चिदपि जानाति किं कस्य श्वो भविष्यति।
अतः श्वः करणीयानि कुर्यादद्यैव बुद्धिमान्॥ (सु र भा - 154/40)

36. न गणस्याग्रतो गच्छेत्सिद्धे कार्ये समं फलम्।
यदि कार्यविपत्तिः स्यात् मुखरस्तत्र हन्यते॥ (सु र भा - 153/33)

37. न देवो विद्यते काष्ठे न पाषाणे न मृण्मये।
भावे हि विद्यते देवस्तस्माद्भावो हि कारणम्॥ (चा नीति: 8/12)

38. पठतो नास्ति मूर्खत्वं जपतो नास्ति पातकम्।
मौनिनः कलहो नास्ति न भयं चास्ति जाग्रतः॥ (सु र भा - 153/5)

39. पदे पदे च रत्नानि योजने रसकूपिका।
भाग्यहीना न पश्यन्ति बहुरत्ना वसुन्धरा॥ (सु र भा - 160/311)

40. पिण्डे पिण्डे मतिर्भिन्ना कुण्डे कुण्डे नवं पयः।
जातौ जातौ नवाचारा नवा वाणी मुखे मुखे॥ (सु र भा - 159/265)

41. पुस्तकेषु च या विद्या परहस्तेषु यद्धनम्।
उत्पन्नेषु च कार्येषु न सा विद्या न तद्धनम्॥ (चा नीतिः- 16/20)

42. प्रथमे नार्जिता विद्या द्वितीये नार्जितं धनम्।
तृतीये नार्जितं पुण्यं चतुर्थे किं करिष्यति॥ (सु र भा - 169/419)

43. प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।
तस्मात्तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता॥ (चा नीतिः- 16/17)

44. मातृभक्त्या इहलोकं पितृभक्त्या तु मध्यमम्।
गुरुभक्त्या परांल्लोकान् जयत्येव न संशयः॥ (मनु - 2/233)

45. यः पृष्ट्वा कुरुते कार्य प्रष्टव्यान् स्वान् हितान् गुरून्।
न तस्य जायतेऽविद्या कस्मिंश्चिदपि कर्मणि॥ (सु र भा - 165/544)

46. यथा चित्तं तथा वाचः यथा वाचस्तथा क्रिया।
चित्ते वाचि क्रियायाञ्च साधूनामेकरूपता॥ (सु र भा - 46/36)

47. युक्तियुक्तं प्रगृह्णीयाद् बालादपि विचक्षणः।
रवेरविषयं वस्तु किं न दीपः प्रकाशयेत्॥ (सु र भा - 153/25)

48. युवा वृद्धोऽतिवृद्धो वा व्याधितो दुर्बलोऽपि वा।
अभ्यासात् सिद्धिमाप्नोति सर्वकार्येष्वतन्द्रितः॥ (हठयोग - 1/66)

49. रङ्कं करोति राजानं राजानं रङ्कमेव च।
धनिनं निर्धनं चैव निर्धनं धनिनं विधिः॥ (चा नीतिः- 10/5)

50. राजपत्नी गुरोः पत्नी भ्रातृपत्नी तथैव च।
पत्नीमाता स्वमाता च पञ्चैताः मातरः स्मृताः॥ (सु र भा - 160/326)

51. लोभमूलानि पापानि रसमूलानि व्याधयः।
इष्टमूलानि शोकानि त्रीणि त्यक्त्वा सुखी भव॥ (सु र भा - 158/214)

52. विद्या मित्रं प्रवासेषु भार्या मित्रं गृहेषु च।
व्याधितस्यौषधं मित्रं धर्मो मित्रं मृतस्य च॥ (चा नीतिः- 5/15)

53. विद्यार्थी सेवकः पान्थः क्षुधार्तो भयकातरः।
भाण्डारी प्रतिहारी च सप्त सुप्तान् प्रबोधयेत्॥ (चा नीतिः- 9/6)

54. विद्वत्त्व च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते॥ (सु र भा - 38/7)

55. शनैः पन्थाः शनैः कन्थाः शनैः पर्वतमस्तके।
शनैर्विद्या शनैर्वित्तं पञ्चैतानि शनैः शनैः॥ (सु र भा - 156/126)

56. शीलं शौर्यमनालस्यं पाण्डित्यं मित्रसङ्ग्रहः।
अचोरहरणीयानि पञ्चैतान्यक्षयो निधिः॥ (सु र भा - 159/253)

57. षड् दोषाः पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता।
निद्रा तन्द्रा भयं क्रोधः आलस्यं दीर्घसूत्रता॥ (विदुरनीतिः- 1/83)

58. सम्पत् सरस्वती सत्यं संतानं सदनुग्रहः।
सत्ता सुकृत् संभारः सकाराः सप्त दुर्लभाः॥ (सु र भा - 156/150)

59. सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः।
सत्येन वाति वायुश्च सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्॥ (चा नीतिः- 5/19)

60. सद्भिरेव सहासीत सद्भिः कुर्वीत सङ्गतिम्।
सद्भिर्विवादं मैत्रीं च नासद्भिः किञ्चिदाचरेत्॥ (सु र भा - 153/3)

61. सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्धं त्यजति पण्डितः।
अर्धेन कुरुते कार्यं सर्वनाशो न जायते॥ (सु र भा - 155/90)

62. सुवर्णपुष्पितां पृथ्वीं विचिन्वन्ति त्रयो जनाः।
शूरश्च कृतविद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम्॥ (सु र भा - 148/254)

63. सेवितव्यो महावृक्षः फलच्छायासमन्वितः।
यदि दैवात् फलं नास्ति छाया केन निवार्यते॥ (सु र भा - 164/496)

64. स्वभावेन हि तुष्यन्ति देवाः सत्पुरुषाः पिता।
ज्ञातयस्त्वन्नपानाभ्यां वाक्यदानेन पण्डिताः॥ (चा नीतिः- 13/3)

65. हस्तस्य भूषणं दानं सत्यं कण्ठस्य भूषणम्।
श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रं भूषणैः किं प्रयोजनम्॥ (सु र भा - 159/291)

66. हीयते हि मतिस्तात हीनैः सह समागमात्।
समैश्च समतामेति विशिष्टैश्च विशिष्टताम्॥ (सु र भा - 86/9)

सन्दर्भ ग्रन्थ -

- पातञ्जलयोगदर्शनम्, पतञ्जलि-कृत योगसूत्र, व्यास-भाष्य, वाचस्पति मिश्र कृत तत्त्ववैशारदी एवं
- विज्ञानभिक्षु कृत योगवार्त्तिक सहित, (संपादक) नारायण मिश्र, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी,
- योगदर्शन, हरिकृष्णदास गोयन्दका, गीता प्रेस, गोरखपुर
- पातञ्जलयोगदर्शनम्, सुरेशचंद श्रीवास्तव, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
- हठप्रदीपिका, कैवल्य धाम, लोनावला, पुणे
- प्राकृतिक आयुर्विज्ञान, राकेश जिन्दल, आरोग्य सेवा प्रकाशन, उमेश पार्क, मोदीनगर
- यज्ञ-चिकित्सा, ब्रह्मवर्चस्, शांतिकुंज, हरिद्वार
- योग तथा मानसिक-स्वास्थ्य, पी.डी. मिश्र, रॉयल बुक कंपनी, लखनऊ
- योग एवं स्वास्थ्य, पी. डी. मिश्र, रैपिडेक्स बुक्स, पुस्तक महल
- आसन प्राणायाम मुद्राबन्ध - स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, मुंगेर, बिहार
- सूर्यकिरण चिकित्सा-विज्ञान, अमर जीत, खंडेलवाल प्रकाशन, जयपुर
- नेचर क्योर फिलासफी एंड मेथड्स, पी.डी. मिश्र, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ
- चरक-संहिता, (सम्पा०) ब्रह्मानंद त्रिपाठी, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2005
- अष्टाङ्गहृदयम्, वाग्भट, (सम्पा.) ब्रह्मानंद त्रिपाठी, चौखंबा संस्कृत प्रतिष्ठान दिल्ली, पुनर्मुद्रित 2014
- आयुर्वेद का दर्शन क्रिया शरीर एवं स्वस्थवृत्त - ब्रह्मवर्चस
- स्वस्थवृत्त - श्री रामहर्ष सिंह
- आयुर्वेद के सिद्धान्त एवं उनकी उपादेयता - डॉ लक्ष्मीधर द्विवेदी
- पदार्थ विज्ञान - डॉ योगेश चन्द्र मिश्र
- अष्टाङ्गहृदयम् ऑफ वागभट्ट - डॉ कांजीवलोचन

- अष्टाङ्ग संग्रह - डॉ (श्रीमती) शैलजा श्रीवास्तव (व्याख्याकार)
- चरक संहिता- भाग-1 - श्री पं० काशीनाथ शास्त्री (हिन्दी व्याख्याकार)
- आयुर्वेद का बृहद्-इतिहास, अत्रिदेव विद्यालङ्कार, हिन्दीसमिति, उत्तरप्रदेश शासन लखनऊ, द्वितीय संस्करण 1976
- संस्कृत-वाङ्मय का बृहद्-इतिहास, बलदेव उपाध्याय, आयुर्वेद का इतिहास (सप्तदश-खण्ड), उत्तरप्रदेश-संस्कृत-संस्थान, लखनऊ 2006
- आयुर्वेद का वैज्ञानिक-इतिहास, आचार्य प्रियव्रत शर्मा, चौखंबा प्रकाशन,वाराणसी
- आयुर्वेद-इतिहास एवं परिचय, विद्याधर शुक्ल एवं रविदत्त त्रिपाठी, चौखंबा, वाराणसी
- संस्कृत-साहित्य में आयुर्वेद, अत्रिदेव विद्यालङ्कार, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी प्रथम-संस्करण, 1956
- लघुसिद्धान्त कौमुदी - भैमी व्याख्या, प्रथम भाग, भीमसेन शास्त्री, चौखम्बा प्रकाशन
- वर्णध्वनि-विज्ञान - डॉ. ब्रह्मदेव विद्यालङ्कार, e-book on "aryamantavya.in"
- सुभाषितानां भाषा - संस्कृतसम्वर्धनप्रतिष्ठानम्
- सुभाषित रत्न भाण्डागार - काशीनाथ शर्मा, भारतीय विद्या संस्थान
- सुभाषित रत्न भाण्डागार - नारायण राम आचार्य

चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

सम्भाषण-संस्कृतम् (Spoken Sanskrit)

अधिगम उपलब्धियाँ -

1. सरल एवं रुचिकर विधि 'संस्कृत कठिन है' इस प्रवाद के निवारण में सहायक होगी।
2. संस्कृत को विषय के रूप में चुनने के लिए उद्यत हो सकेंगे।
3. संस्कृत-संभाषण भाषा और संस्कृति के प्रति स्वाभिमान उत्पन्न करेगा।
4. भारत की आत्मा अध्यात्म को समझने में यह कोर्स सहायक होगा।

4 क्रेडिट, 60 व्याख्यान **(आन्तरिक मूल्याङ्कन 50 + बाह्य मूल्याङ्कन 50 = पूर्णाङ्क-100)**

यूनिट - 1 **10 व्याख्यान**

गीतम् - पठत संस्कृतम्.....। मम नाम -भवत: नाम किम्? भवत्याः नाम किम्? द्वयोः मध्ये परिचयः। परस्परं पञ्च जनान ।सः कः? सा का? तत् किम्? एषः, एषा, एतत्। अहम्, भवान्, भवती..... अभिनयः। आम्,न, वा/किम्.....अभिनयः । अस्ति, नास्ति.....अभिनयः । अत्र, तत्र, कुत्र, सर्वत्र, अन्यत्र, एकत्र - अभिनयः। षष्ठी - तस्य, एतस्य, कस्य, तस्याः, एतस्याः, कस्याः, मम, भवतः, भवत्याः..... अभिनयः। मम नासिका, भवतः नासिका, भवत्याः नासिका। एतत् कस्य? अङ्गानि प्रदर्श्य प्रश्नः। दशरथस्य..., सीतायाः..., लेखन्याः..., पुस्तकस्य...,। स्फोरकपत्रस्य (Flash Card) उपयोगः करणीयः। 'पुत्रः' 'पतिः' इत्यादीनां वाक्यपत्राणाम् (Charts) उपयोगः करणीयः। आवश्यकम्, मास्तु, पर्याप्तम्, धन्यवादः, स्वागतम्। पूर्वनिश्चितसम्भाषणप्रदर्शनम्। क्रियापदानां पाठनम् - गच्छति। आगच्छति। पठति। लिखति। खादति। पिबति ।क्रीडति। वदति। उत्तिष्ठति। उपविशति। गच्छामि। आगच्छामि.....। गच्छतु। आगच्छतु.....। सङ्ख्याः - (अ) 1, 2, 3, 4,.....10 (आ) 10, 20, 30,.....100। समयः - 5.00, 5.15, 5.30, 4.45। कथा - गतानुगतिको लोकः। (काचित् कथा सरलया भाषया वक्तव्या)। रटनाभ्यास: (पूर्वमेव लिखितानि पठितानि च कानिचित् वाक्यानि वाचनीयानि)। एकं वाक्यम् (प्रत्येकं छात्रः एकं वाक्यं वदेत्।)

यूनिट - 2 **10 व्याख्यान**

शब्देषु लिङ्गभेदज्ञापनम् - यथा -सः सुधाखण्डः, सा कुञ्चिका, तत् पुष्पम्। बहुवचनपाठनम् - बालकाः..., बालिकाः..., लेखन्यः..., पुस्तकानि...। ते, के, ताः, काः, तानि, कानि, एते, एताः, एतानि, भवन्तः, भवत्यः, वयम् । (चित्राणि उपयोक्तव्यानि।) वचनपरिवर्तनाभ्यासः । यथा - स: बालक: - ते बालकाः।
अस्ति - सन्ति। कति? सप्तमी - हस्ते। उत्पीठिकायाम्। लेखन्याम्। पुस्तके। (स्फोरकपत्रस्य प्रयोग: करणीयः।) वाक्यपत्रस्य उपयोगेन वाक्यानि वाचनीयानि। कदा? उत्तराणां प्रश्नाः। (शिक्षकः आरम्भे उत्तरं वदेत्, अनन्तरं छात्राः तस्य प्रश्नं पृच्छेयुः।) यथा - रामः प्रातःकाले शालां गच्छति। रामः कदा शालां

गच्छति? अद्य, श्वः, परश्वः, प्रपरश्वः, ह्यः, परह्यः, प्रपरह्यः, इदानीम्। गच्छन्ति। गच्छामः। गच्छन्तु। शिष्टाचारः - सुप्रभातम्/नमस्कारः/शुभरात्रिः/हरिःओम्/क्षम्यताम्/चिन्ता मास्तु। प्रातर्विधिः - दन्तधावनम् इत्यादयः शब्दाः पाठनीयाः। सङ्ख्या - 1-50। समयः - 6.05, 6.10, 5.55, 5.50। स्वागतसम्भाषणम्। (शिक्षकः सहशिक्षकेण सह कृत्वा प्रदर्शयेत्) कथा। रटनाभ्यासः। वाक्यद्वयम् (प्रत्येकम् अपि छात्रः वाक्यद्वयं वदेत्।)

यूनिट - 3 10 व्याख्यान

क्रियापदानां बहुवचनरूपाणि। गच्छन्ति - गच्छामः - गच्छन्तु (Chart दर्शनीयम्) पिबन्ति - पिबामः - पिबन्तु। लिखन्ति - लिखामः - लिखन्तु। इत्यादिपरिवर्तनाभ्यासः कारणीयः। द्वितीयाविभक्तिः - स्फोरकपत्राणाम् उपयोगः। (वाक्यपत्राणि उपयुज्य वाक्यानि वाचनीयानि।) कृपया ददातु - वस्तुनि प्रदर्श्य। शिक्षकः एकैकं वस्तु प्रदर्शयति। उदा. – ग्रन्थः, घटी,. छात्राः - कृपया ग्रन्थं ददातु, कृपया घटीं ददातु इत्यादि वदेयुः। (स्फोरकपत्रस्य उपयोगः) पुरतः, पृष्ठतः, वामतः, दक्षिणतः, उपरि, अधः। (चित्रं दर्शनीयम्) इतः, ततः, ...तः, गृहतः, कुतः? (स्फोरकपत्राणाम् उपयोगः) वाक्यपत्राणि उपयुज्य वाक्यानि वाचनीयानि। कथम्? सम्यक्। शीघ्रम् - मन्दम्। उच्चैः - शनैः। पठनार्थम्, किमर्थम्? सप्तककाराः - किम्, कुत्र, कति, कदा, कुतः, कथम्, किमर्थम् (Chart प्रदर्शनीयम्)। एकैकम् उपयुज्य परस्परं प्रश्नाः। अपि। अस्तु। अहं न जानामि। - कानिचन वाक्यानि। भूतकालीनक्रियापदानां पाठनम्। गतवान् - पठितवान् - लिखितवान्। गतवती - पठितवती - लिखितवती। क्रियापदकोष्ठकस्य प्रथमपृष्ठस्य अभ्यासः। द्वितीयपृष्ठस्य सर्वाणि क्रियापदानि उपयुज्य छात्राः वर्तमानकाले वाक्यानि वदन्ति। (ए.व - ब.व.) विशिष्टक्रियापदानाम् अभ्यासः - करोमि - कुर्मः। करोति - कुर्वन्ति। ददामि - दद्मः। ददाति - ददति। शृणोमि – शृणुमः। शृणोति - शृण्वन्ति। जानामि – जानीमः। जानाति - जानन्ति। सम्बोधनम् - भोः!, श्रीमन्!, मान्ये!, भगिनि!, मित्र!, ...महोदय!, राम!, सीते! इत्यादि। सङ्ख्या - 1-100। समयः - 1.00, 2.00, 3.00, 4.00। सम्भाषणप्रदर्शनम् (मित्रसंलापः)। कथा। वाक्यत्रयम् एकैकोऽपि छात्रः वदेत्।

यूनिट - 4 10 व्याख्यान

अतः, इति, अस्मि, यदि -तर्हि, यथा - तथा, तः - पर्यन्तम् (वाक्यपत्रस्य उपयोगेन वाक्यानि वाचनीयानि।) अद्य आरभ्य कृते (वाक्यपत्रस्य उपयोगः करणीयः) क्तवतुप्रत्ययान्तानाम् अभ्यासः गतवान् - पठितवान् - लिखितवान् (ए.व. पुंलिङ्गे)। गतवती - पठितवती - लिखितवती (ए.व. स्त्रीलिङ्गे)। गतवन्तः - पठितवन्तः - लिखितवन्तः (ब.व. पुंलिङ्गे)। गतवत्यः - पठितवत्यः - लिखितवत्यः (ब.व. स्त्रीलिङ्गे)। सः गतवान् - सा गतवती - लिङ्गपरिवर्तनाभ्यासः। अहं गतवान् - अहं गतवती - लिङ्गपरिवर्तनाभ्यासः। क्रियापदानां कालपरिवर्तनाभ्यासः। यथा - गच्छति - गतवान्, गतवती। विशेषपाठनम् - आसीत्, आसन्, आसम्। एकः, एका, एकम् - लिङ्गभेदः ज्ञापनीयः। (स्फोरकपत्रस्य उपयोगः) भोजनसम्बन्धिशब्दाः यथा - सूपः, शाकम्, इत्यदयः। सङ्ख्या। समयः। ॐ – सङ्ख्याक्रीडा। कथा। सम्भाषणप्रदर्शनम्। चत्वारि वाक्यानि। वाहनानां नामानि। तृतीयाविभक्तिः - दण्डेन, माषिकया, लेखन्या, पुष्पेण। (वाक्यपत्रस्य आधारेण

वाक्यानि वाचनीयानि।) सह, विना। अद्यतन, ह्यस्तन, श्वस्तन, पूर्वतन, इदानीन्तन भविष्यत्कालीनक्रियापदानां पाठनम्। गमिष्यति, पठिष्यति, लेखिष्यति। (कोष्ठकस्य साहाय्येन) गत, आगामि। अभवत्। क्व प्रयोगः (कोष्ठकस्य साहाय्येन)। यदा – तदा। बन्धुवाचकशब्दाः। वेशभूषणानां नामानि। वर्णाः। रुचयः। क्रीडा - एकश्वासेन सङ्ख्याकथनम्। कथा। पञ्च वाक्यानि।

यूनिट - 5 10 व्याख्यान

नूतनम्, पुरातनम्, बहु, किञ्चित्,दीर्घः, ह्रस्वः। उन्नतः, वामनः। स्थूलः, कृशः। एतादृश, तादृश, कीदृश ?तुमुन् (कोष्ठकस्य साहाय्येन)। किन्तु। निश्चयेन। बहुशः, प्रायशः। किल, खलु। शक्नोति। विशेषणविशेष्यभावस्य अभ्यासः। (प्रथमाविभक्तौ) सः उत्तमः बालकः। सा उत्तमा बालिका। तत् उत्तमं पुस्तकम्। इव। विनोदकणिका। (गतवान् 'इव' अभिनयं कृतवान्!) अपेक्षया। पशूनां नामानि। अवयवानां नामानि। वाक्यविस्तारणाभ्यासः। (सः मम पुस्तकं प्रातःकाले पञ्चवादने पठितवान्।) इतः पूर्वम् - इतः परम्। 'रामकृष्ण' सङ्ख्याक्रीडा। कथा। षट् वाक्यानि। क्त्वा - तुमुन् - परिवर्तनाभ्यासः। बहिः, अन्तः। रिक्तम्, पूर्णम्। इतोऽपि। इत्युक्ते। अन्ते। चेत् - नो चेत्। आरोग्यसम्बन्धिशब्दाः – वैद्यरोगिसम्भाषणम्। प्रश्नोत्तरस्पर्धा। ऋषीणां नामानि। कथा - शिक्षकः एका कथां वदति। अनन्तरं छात्रेषु एकैकः तस्याः कथायाः एकैकं वाक्यम् उक्त्वा कथां सम्पूर्णा करोति। सङ्ख्या - दीर्घसङ्ख्यापाठनम्। प्रश्नोत्तरम्। क्रीडा - (गणद्वये नामस्मरणक्रीडा) कथा। पुस्तकानां परिचयः। सप्त वाक्यानि।

यूनिट - 6 10 व्याख्यान

वारम्। अतः - यतः परिवर्तनाभ्यासः। यद्यपि, तथापि। यत्र, तत्र। कति - कियत् - एतयोः भेदज्ञापनम्। यावत्, तावत्। यत्, तत्। यः, सः। या, सा। अस्माकम्। चर्चा। सङ्ख्या - 'शतायुः - गतायुः' क्रीडा। विनोदकणिकाकथनम्। कथा। अष्ट वाक्यानि। चित्। ..... द्वयम्। (पुस्तकद्वयम्, बालकद्वयम्) सङ्ख्यासु लिङ्गभेदः। एकः - एका - एकम् द्वयम् - द्वयम् - द्वयम् त्रयः - तिस्रः - तीणि, चत्वारः - चतस्रः - चत्वारि शिक्षकः - अहं वैद्यः - मम नाम सुरेशः (छात्राः तमुद्दिश्य प्रश्नान् पृच्छेयुः।) ..... अर्थम् (समाजार्थम्, संस्कृतकार्यार्थम्...)। तव्यत् – अनीयर्। अनन्त्यकथारचना। सङ्ख्यान्वेषणम् (क्रीडा)। छात्रैः सह प्रश्नोत्तरम्। समाजनिधिविषये पुनःस्मारणम्। पत्रलेखनम्। दूरवाणीसम्भाषणम्। मार्गनिर्देशः – कुत्र गन्तव्यम् इत्यादि। तव्यत् अभ्यासार्थम् – अद्य किं किं करणीयम्? सान्दर्भिकभाषणम् - 1. प्रवासात् प्रतिनिवर्तनस्य। 2. आपणिकस्य इत्यादि। क्रीडा – सङ्ख्यायोजनम् (गणद्वये)। शुभाशयाः। असत्यकथनम् / कल्पनाकथनम्। पत्राचारप्रगतशिक्षणादिविषये सूचना।

सन्दर्भ ग्रन्थ -

अभ्यासपुस्तकम् - संस्कृतभारती, बंगलुरू